अंक - 34, अर्ध वार्षिक
फरवरी, 2021

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

कोल इंडिया
Coal India

कोयला भारती

बीसीसीएल की गृह पत्रिका

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

एक मिनीरत्न कंपनी
(कोल इण्डिया लिमिटेड का एक अंग)
कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद- 826005

Digital India
Power To Empower

कोयला मंत्रालय के सचिव और कोल इण्डिया लिमिटेड अध्यक्ष का बीसीसीएल दौरा

कोयला मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. ए.के. जैन (भा.प्र.से.) और कोल इण्डिया लिमिटेड के अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल(भा.प्र.से.) ने दिनांक 28-29 जनवरी 2021 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड का दो दिवसीय दौरा किया। उनके आगमन पर कंपनी निदेशक मंडल के साथ अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री गोपाल सिंह द्वारा स्वागत किया गया। कोयला सचिव और अध्यक्ष, कोल इंडिया के दौरे के प्रमुख बिंदु: -

- पश्चिमी झरिया क्षेत्र मुनीडीह में स्थित एशिया प्रसिद्ध भारत की प्रथम मोनो रेल परियोजना एवं अत्याधुनिक खदान का निरीक्षण।
- मुनीडीह वाशरी पहुंचकर नयी वाशरियों के निर्माण हेतु अधिकारियों के साथ आवश्यक विचार विमर्श।
- भू-धंसान एवं अग्नि प्रभावित लोदना क्षेत्र में स्थित एनटी-एसटी परियोजना स्थल का निरीक्षण एवं खनन कार्यों का अवलोकन।
- लोदना क्षेत्र स्थित गोकुल ईको-रेस्टोरेशन पार्क का दौरा एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम।
- बीसीसीएल के 9 क्षेत्रों (ब्लॉक II, गोविंदपुर, सिजुआ, पूर्वी झरिया, पश्चिमी झरिया, बरोरा, कुसुंडा, बस्ताकोला और कतरास) में ऑनलाइन माध्यम से नेताजी सुभाष चंद्र बोस ईको-पार्क का शिलान्यास।
- बेलगड़िया पुनर्वास स्थल का भी दौरा और अग्नि प्रभावित लोगों के पुनर्वास अभियान के संबंध में प्रगति रिपोर्ट की विस्तृत समीक्षा।

इस दौरान दोनों उच्चाधिकारियों ने बीसीसीएल मुख्यालय, कोयला भवन में कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय समीक्षात्मक बैठक की और कोयले की उत्पादन की वर्तमान स्थिति एवं कंपनी के अन्य महत्वपूर्ण मामलों पर चर्चा की तथा उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उचित दिशा निर्देश दिए। इसके अलावा उपायुक्त धनबाद श्री उमाशंकर सिंह की उपस्थिति में जिला प्रशासन, धनबाद के साथ भी झरिया मास्टर प्लान की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा की। सचिव, कोयला मंत्रालय डॉ. ए.के. जैन ने सी.एम.पी.एफ.ओ. के अधिकारियों के साथ भी एक समीक्षा बैठक की।

• • •

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय साथियो,

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की गृह पत्रिका कोयला भारती के अंक-34 के माध्यम से एक बार पुन: आप से संवाद करते हुए अपार हर्ष एवं प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी और कंपनी की प्रमुख गतिविधियों के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कंपनी के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करने का एक सशक्त माध्यम है। 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस के अवसर पर पत्रिका का विमोचन किया जाना एक सराहनीय कदम है।

विदित है कि पिछले दिनों वैश्विक महामारी कोविड-19 ने संपूर्ण उद्योग जगत को प्रभावित किया है। इसके प्रतिकूल प्रभाव से बीसीसीएल भी अछूता नहीं रहा है। कंपनी के सामने कई चुनौतियां उत्पन्न हो गयी हैं। किंतु हम जानते हैं कि इन सारी समस्याओं का एक ही समाधान है- एक टीम के रूप में समर्पित भाव से अपना शत-प्रतिशत योगदान देते हुए उत्पादन कार्य करना और निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना। मुझे आप सभी की क्षमताओं और क़ाबिलीयत पर पूर्ण विश्वास है। सभी के समग्र प्रयासों से हम कंपनी को एक बार फिर से नई ऊंचाइयों पर पहुँचाकर कीर्तिमान स्थापित करने में सफल होंगे और देश की ऊर्जा आवश्यकताओं को निर्बाध रूप से पूरा करने में योगदान देते रहेंगे। बस हमें योजनाबद्ध तरीके से नई तकनीक, नवोन्मेषी विचारों एवं कुशल तथा प्रशिक्षित श्रमशक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हुए निरंतर आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

कोयला खनन हमारा प्राथमिक उद्देश्य है किंतु इसके साथ ही आसपास के समाज और परिवेश का ध्यान रखना भी हमारा नैतिक दायित्व है। कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व के तहत हम सामुदायिक विकास की तमाम गतिविधियां तो करते ही हैं साथ ही पर्यावरण और जनकल्याण के कार्य भी हमेशा हमारी प्राथमिकता में रहते हैं। इसके अलावा कंपनी के परिधीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और पेयजल जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की बेहतरी के लिए भी बीसीसीएल निरंतर प्रयत्नशील रहता है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए पिछले दिनों हमने समाधान केंद्र, भू-संपदा केंद्र, सिलाई प्रशिक्षण केंद्र, कौशल विकास केंद्र, ध्यान एवं योग केंद्र, सामुदायिक उद्यान, खेल अकादमी और स्नेह परोपकार केंद्र जैसे तमाम जनोपयोगी केंद्रों की स्थापना की है।

अन्य क्षेत्रों की तरह हम राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में भी निरंतर उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। भारत कोकिंग कोल लिमिटेड का राजभाषा विभाग कंपनी में आंतरिक रूप से राजभाषा कार्यान्वयन तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं शिक्षण-प्रशिक्षण की जिम्मेदारी के साथ-साथ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के माध्यम से धनबाद नगर में स्थित केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में भी राजभाषा प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व बखूबी निभा रहा है। इसी का परिणाम है कि बीसीसीएल की अध्यक्षता में गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धनबाद को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2019-20 के लिए पूर्वी क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है।

हमारी कंपनी हिंदी भाषी क्षेत्र (क क्षेत्र) में स्थित है और साथ ही श्रमिक बाहुल्य उद्योग भी है। अतःव्यापक रूप से श्रमिक हित और राजभाषा नीति के अनुरूप कार्य करने के लिए हमें हिंदी में ही समस्त कार्यालयीन कार्य करना अत्यंत आवश्यक है। मैं कोयला भारती के माध्यम से एक बार पुनः सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि राजभाषा हिंदी से संबंधित सभी प्रावधानों का शत-प्रतिशत कार्यान्वयन सुनिश्चित करें।

अंत में आप सभी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ पत्रिका संपादन मंडल को सफल प्रकाशन के लिए बधाई।

पी. एम. प्रसाद
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक,
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

संरक्षक की कलम से

प्रिय साथियो,

21 फरवरी को मातृभाषा दिवस के अवसर पर प्रकाशित कंपनी की गृह पत्रिका 'कोयला भारती' के अंक-34 के माध्यम से एक बार पुन: आपको संबोधित करते हुए प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिंदी में अपना समस्त कार्यालयीन कार्य करते हुए हमें अन्य भारतीय भाषाओं, विशेषकर अपनी मातृभाषा को व्यवहार में बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। संस्कृति और सभ्यता के संरक्षण के लिए भाषा को बचाए रखना सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है। हमें अंग्रेजी या दूसरी प्रमुख वैश्विक भाषाओं को अवश्य सीखना चाहिए, किंतु अपनी मातृभाषा की कीमत पर कदापि नहीं।

कोविड-19 महामारी के बावजूद मैं आप सभी के योगदान की सराहना एवं प्रशंसा करता हूँ। बीसीसीएल परिवार सदैव आपसी सामंजस्य और सहयोग की भावना के साथ कंपनी को आगे बढ़ाने के लिए कटिबद्ध है। कंपनी को प्रगति पथ पर आगे बढ़ाने और यदा-कदा उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियों से उबारने में हम सब का समर्पित योगदान बहुत आवश्यक है। सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने उत्तरदायित्वों के प्रति तत्पर रहते हुए सामूहिक प्रयास और टीम भावना के साथ आगे बढ़ेंगे तो निश्चित ही हम अपनी कंपनी की उत्पादकता को विकासोन्मुख बनाने में सफल रहेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम अपने निर्धारित लक्ष्यों को बहुत जल्द प्राप्त करने में सफल होंगे।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड देश की ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति के लिए कोयला उत्पादन के साथ-साथ पर्यावरण और कॉरपोरेट सामाजिक दायित्वों का भी बखूबी निर्वहन कर रहा है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में किए जा रहे हमारे कार्यों की प्रशंसा राष्ट्रीय स्तर पर हो रही है। हम सीएसआर और कल्याण विभाग के माध्यम से निरंतर सामाजिक उत्थान के कार्य भी कर रहे हैं और अपने आसपास के लोगों को बेहतर जीवन यापन में मदद कर रहे हैं।

आने वाला समय नई तकनीकी और प्रौद्योगिकी विकास का है। मुझे खुशी है कि कोविड काल में उत्पन्न नई चुनौतियों में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने तकनीकी का भरपूर इस्तेमाल करते हुए कंपनी में संचार व संप्रेषण सहज बनाए रखा। कोविड संकट काल के दौरान लगभग सभी संस्थानों में राजभाषा कार्यशालाओं एवं नियमित बैठकों में कमी आई परंतु विपरीत परिस्थितियों में भी बीसीसीएल राजभाषा विभाग द्वारा तकनीकी सुविधाओं का व्यापक उपयोग करते हुए वीडियो संवाद, गूगल मीट आदि के माध्यम से सभी निर्धारित बैठकों एवं प्रशिक्षण कार्यशालाओं को नियत समय पर ऑनलाइन रूप में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। यही नहीं, जब सितंबर माह में किसी भी तरह के सामूहिक कार्यक्रमों की अनुमति नहीं थी उस समय भी विभाग द्वारा राजभाषा पखवाड़ा के दौरान ऑनलाइन माध्यम से विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं, वेबिनार व संगोष्ठियों का आयोजन करके हिंदी दिवस पर उत्साही माहौल तैयार करना प्रशंसनीय है।

राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए मुख्यालय के सभी विभागों के साथ ही साथ कंपनी के सभी क्षेत्रों का सहयोग भी अपेक्षित है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि बीसीसीएल में अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा हिंदी में काम करने के प्रति उत्साहित व प्रतिबद्ध हैं। पिछले आंकड़ों के अनुसार हमारे कई विभागों में शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा रहा है। पिछले वर्ष हमने राजभाषा हिंदी में कार्य-क्षमता बढ़ाने के लिए हिंदी में100 प्रतिशत कार्य करने वाले विभागों के बीच पुरस्कार देने की योजना का शुभारंभ किया है। इससे पुरस्कार पाने के लिए दूसरे विभागों के बीच हिंदी में शत प्रतिशत कार्य करने की आकांक्षा व प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होगी।

आप सभी को एक बार पुन: मातृभाषा दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ **'कोयला भारती'** पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई व उत्तरोत्तर विकास के लिए शुभकामनाएं।

पी. वी. के. आर. मल्लिकार्जुन राव
निदेशक (कार्मिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

अंक – 34, अर्ध वार्षिक
फरवरी, 2021

कोयला भारती

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की गृह पत्रिका

अध्यक्ष
पी. एम. प्रसाद
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

संरक्षक
पी. वी. के. आर. मल्लिकार्जुन राव
निदेशक (कार्मिक)

परामर्श
संतोष नारायण सिन्हा
महाप्रबंधक (कार्मिक एवं औद्यो. सं.)/राजभाषा

विशेष सहयोग
आशीष कुमार बोस
विभागाध्यक्ष, भुगतान विभाग

अनिल कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त)

दीपक कुमार सिन्हा
प्रबंधक/सचिव (राजभाषा)

गणेश कुमार चौधरी
उप प्रबंधक (वित्त)

अरिजित चक्रवर्ती
सहायक प्रबंधक (जन संपर्क)

वरिष्ठ संपादक
दिलीप कुमार सिंह
उप प्रबंधक (राजभाषा)

सहयोग
महेन्द्र कुमार सिंह, वरीय निजी सहायक
अनिरुद्ध नोनिया, सहायक अनुवादक
वंदना देवी, सहायक अनुवादक

प्रकाशक
राजभाषा विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद- 826005
दूरभाष : 0326-2236463
फैक्स : 0326-2230262

अनुक्रम

04 संपादकीय-भाषा और समाज का संबंध
06 मंगलेश डबराल
09 राइनोप्लास्टी : नाक की कॉस्मेटिक सर्जरी
13 झारखंड : व्यापक औद्योगिक संभावनाओं वाला राज्य
15 अव्यक्त संवेदना (कहानी)
20 राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन
22 बदलते भारत में महिलाओं की भूमिका
24 सेवानिवृत्ति के पैसों का सुरक्षित निवेश
26 मानव जीवन में आध्यात्मिकता
27 कोयले की आत्मकथा [कविता]
27 आनंद ही कुछ और है [कविता]
28 बैसाखियाँ [कविता]
29 राजभाषा कार्यान्वयन
32 कंपनी गतिविधियां

संपादक
उदयवीर सिंह
उप प्रबंधक (राजभाषा)

'कोयला भारती' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं । इनसे प्रकाशक / संपादक / बीसीसीएल प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं । अतः पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार उत्तरदायी हैं। न्यायिक सीमा, धनबाद। निःशुल्क, आंतरिक वितरण हेतु।

नोटः 'कोयला भारती' पत्रिका में प्रकाशन हेतु आप अपनी रचनाएँ ई-मेल udayvir4@gmail.com पर भी भेज सकते हैं

संपादकीय

भाषा और समाज का संबंध

सामान्य अर्थ में भाषा हमारे बातचीत करने अथवा आपसी संवाद का माध्यम हैं। भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष्' मूल धातु में 'आ' प्रत्यय लगने से बना है। 'भाष्' धातु का अर्थ है 'बोलना' या 'कहना' अर्थात भाषा वह है जिसे बोला जाय। प्रसिद्ध भाषाविद **डॉ. भोलानाथ तिवारी** के अनुसार, "भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।"

ध्यान देने वाली बात है कि भाषा की परिभाषा गढ़ते समय भाषा के तकनीकी अवयवों यथा; उच्चारण स्थल तथा यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों के साथ 'समाज' को भी केंद्र में रखा गया है। यदि भाषा समाज विशेष के लोगों के आपस में संवाद का साधन है तो कल्पना कीजिए कि यदि समाज ही न हो तो क्या भाषा की कोई प्रासंगिकता बचेगी? इससे भी आगे विचार करें तो क्या बिना समाज के भाषा का अस्तित्व संभव है? यकीनन नहीं। अब आइए इसके विपरीत पक्ष पर नजर डालें कि क्या बिना भाषा के किसी समाज की कल्पना की जा सकती है? उत्तर होगा नहीं। बिना भाषा के समाज बन ही नहीं सकता। किसी भी समाज के निर्माण में भाषा प्राथमिक और अनिवार्य कारक है। ठीक उसी प्रकार भाषा के जन्म के लिए समाज का होना भी एक अनिवार्य शर्त है। भाषा अनिवार्यतः समाज पर निर्भर रहती है। किंतु यह पता करना कि भाषा पहले आयी या समाज पहले बना, लगभग नामुकिन है। तथ्य तो यह है कि दोनों की युगपत् उपस्थिति होती है। अब जब भाषा और समाज अपने आरंभिक काल से ही एक दूसरे के अस्तित्व पर निर्भर हैं तो एक का दूसरे पर प्रभाव पड़ना भी लाज़िमी है। जहाँ एक तरफ समाज भाषा के स्वरूप निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तो वहीं दूसरी ओर वह स्वयं भी भाषा के व्यापक प्रभाव से अछूता नहीं रह सकता।

समाज का भाषा पर प्रभाव:

भाषा का अस्तित्व समाज पर ही निर्भर करता है, जहाँ कोई समाज नहीं वहाँ कोई भाषा भी नहीं हो सकती। यदि कोई समाज अचानक समाप्त हो जाए तो उस समाज विशेष की भाषा भी उसके साथ ही खत्म हो जाएगी। उदाहरण के लिए आप सिंधु घाटी सभ्यता को ले सकते हैं या कह सकते हैं कि तमात जनजातीय भाषाएं भी संबंधित समाज तक ही सीमित रहती हैं।

यदि बात करें भाषा की प्रवृत्ति, उसके चरित्र या तेवर की तो यह काफी हद तक उस भाषा के समाजिक परिवेश से ही निर्धारित होता है। राजस्थान और हरियाणा की सामाजिक परिस्थितियां कठोर रहीं हैं। प्राकृतिक रूप से भी जीवन कठिन रहा है और संस्कृतिक रूप से भी यह क्षेत्र युद्ध-उन्माद की भूमि रहा है। अतः स्वाभाविक रूप से यहाँ की भाषा ओज प्रधान है तथा भाषा में कठोरता, अक्खड़ता या आक्रामकता जैसे गुण देखने को मिलते हैं। इसके विपरीत ब्रज एवं अवधी क्षेत्र में प्राकृतिक एवं युद्धादि परिस्थितियां अधिक सामान्य और अपेक्षाकृत शांत ही रही हैं। परिणामस्वरूप इस क्षेत्र की भाषा और बोलियों में कोमलता और मधुरता जैसे गुण देखने को मिलते हैं।

इसी तरह समाज जितना विकासशील होगा उस समाज की भाषा भी उतनी विकसित होगी। उन्नत समाज में ज्ञान-विज्ञान के नये शब्दों का निर्माण होगा जिससे भाषा अधिक समृद्ध होगी। अर्थव्यवस्था और राजनीतिकरूप से विकसित समाज का दुनिया के अन्य देशों या समाजों से अधिक संपर्क होगा परिणामतः बाहरी शब्दावली के प्रभाव से भाषा का ज्यादा विस्तार संभव होगा। इसके विपरीत सीमित या कम संपर्क क्षेत्र वाले समाज की भाषा का विकास भी सीमित ही रहेगा। स्पष्ट रूप से सामाजिक संरचना भाषा पर व्यापक प्रभाव डालती है।

भाषा का समाज पर प्रभाव:

यदि समाज भाषा की प्रकृति और तेवर तय करता है तो भाषा भी समाज में बहुत तक अपने प्रभाव के निशान अवश्य छोड़ती है। एक ओर समाज में भाषा के सकारात्मक प्रभाव देखे जा सकते हैं तो वहीं कुछ नकारात्मक असर के साथ भाषा समाज का न्यूनाधिक नुकसान भी कर सकती है।

समाज पर भाषा के सकारात्मक प्रभाव देखें तो हम कह सकते हैं कि भाषा राष्ट्रीय तथा सामाजिक चेतना के विकास एवं प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए आप क्रमशः राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'भारत भारती' तथा गोस्वामी तुलसीदास की 'रामचरित मानस' को ले सकते हैं। ये भाषा की ही शक्ति है कि इन दो रचनाओं ने हमारे भारतीय राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है।

विद्वानों का विचार है कि हमारी भाषा ही काफी हद तक हमारे चिंतन के स्तर या सीमाओं का निर्धारण करती है। प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार 'अज्ञेय' का कहना है कि "हम उतना ही सोच सकते हैं जितना सोचने की सामर्थ्य हमें हमारी भाषा देती है।" एक तरह से विचार करें तो यह सत्य ही प्रतीत होता है। जितने शब्द हमारी भाषा में है उनके बाहर सोचना और विचार करना लगभग असंभव है। हाँ, अपवाद की संभावना सब जगह बनी रहती है। किंतु सामान्य स्तर पर देखें तो किसी संपन्न भाषा और सीमित शब्द संपदा वाली भाषा समाज में पैदा हुए व्यक्ति के चिंतन-मनन एवं सोचने समझने के स्तर में अवश्य ही अंतर होता है। महान हिंदी साहित्यकार 'भारतेंदु हरिश्चद्र' का तो यहां तक मानना है कि भाषा के विकास से ही सामाजिक विकास का रास्ता गुजरता है –

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय के सूल ।।'

उक्त सकारात्मक पहलुओं के साथ-साथ भाषा के कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं; जैसे भाषा सामाजिक स्तरीकरण अथवा ऊंच-नींच की भावना बनाए रखने के एक टूल या साधन के रूप में प्रयुक्त होती रही है। वर्तमान में हमारे यहां अंग्रेजी बोलने वालों को अन्य भारतीय भाषाओं के बोलने वालों की तुलना में उच्च सामाजिक स्तर का समझा जाता है। यही नहीं यह हीनभावना समाज में काफी गहरे तक व्याप्त है। अन्य भाषाभाषी किसी न किसी अवसर पर यह अवश्य सोचते हैं कि अंग्रेजी जानने वालों की तुलना में उनकी सामाजिक स्थिति कमजोर है। मध्यकाल में फारसी भी कुछ-कुछ अंग्रेजी की तरह ही उच्च सामाजिक स्तर का प्रतीक हुआ करती थी। प्रचीनकाल में संस्कृत और प्राकृत या अपभ्रंश भाषा के समय भी यही स्थिति रही है। संस्कृत बोलने वालों को कुलीन वर्ग का समझा जाता था। आज भी ग्रामीण जीवन में खड़ी बोली मानक हिंदी और ग्रामीण हिंदी अथवा स्थानीय बोली के आधार पर ऊंच-नीच की भावना देखी जा सकती है।

कभी-कभी भाषा सामाजिक विखंडन के कारक के रूप में भी सामने आ सकती है। उदाहरण के लिए आप दक्षिण भारत, विशेष रूप से तमिलनाडु में तमिल-हिंदी विरोध या महाराष्ट्र में कभी-कभी जोर पकड़ने वाली मराठी मानुष की भावना आदि जैसी घटनाओं के चलते भाषायी आधार पर होने वाले दंगों को देख सकते हैं। जब भाषा समाज को जोड़ने की जगह तोड़ने के साधन के रूप में भी प्रयुक्त हुई है।

भाषा संस्कृति आक्रमण का कारक भी बनती है। आजकल आपने कहीं न कहीं अवश्य ही सुना होगा कि पश्चिमी संस्कृति हम पर हावी हो रही है अथवा हम पर अंग्रेजी संस्कृति का आक्रमण हो रहा है। आक्रमण क्या है? अनियंत्रित प्रभाव ही आक्रमण है और यह सत्य है कि हम पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हो रहे हैं। इस प्रभाव की शुरूआत सबसे पहले भाषा के माध्यम से ही होती है। हम पहले ही कह चुके हैं कि अंगेजी जानने वालों की तुलना में अपनी मातृभाषा या अन्य भारतीय भाषाओं के बोलने वाले हीन भावना से ग्रसित हो जाते हैं और स्वयं को जाने-अनजाने ही कमतर आंकने लगते हैं। जिस दिन किसी समाज को अपनी भाषा को बोलने में अपराध बोध होने लगे तो समझ लीजिए दूसरी भाषा अथवा संस्कृत का आक्रमण हो चुका है। यह एक तरह का सांस्कृतिक आक्रमण ही तो है कि अंग्रेजी की वर्तमान स्थिति के कारण भारतीय भाषाओं में आत्मसम्मान का भाव कम हुआ है।

अंत में यही कहना चाहूंगा कि भाषा और समाज दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं, सहयोगी हैं और सनातन से एक-दूसरे के सहयात्री की तरह निरंतर अपनी यात्रा जारी रखे हुए हैं। मातृभाषा दिवस के अवसर पर प्रकाशित 'कोयला भारती' का ये 34वां अंक आपके हाथों में हैं। हमेशा की तरह आपके सुझावों, प्रतिक्रियाओं और समीक्षात्मक पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी।

(उदयवीर सिंह)
संपादक, कोयला भारती

समसामयिक आलेख

पहाड़-सी ऊँचाई और समंदर-सी गहराई के स्वामी थे - मंगलेश डबराल

- डॉ. मनोज कुमार

मंगलेश डबराल समकालीन हिन्दी कवियों में सबसे चर्चित नाम है। हाल ही में उनका निधन हुआ है। उनके व्यक्तित्त्व व कृतित्त्व से पाठकों को रूबरू करता हुआ आलेख...

वो सन 2008 के दिसम्बर माह की एक सर्द रात थी। दिल्ली के श्री राम सेंटर में एक आयोजन में मंगलेश डबराल से छोटी-सी मुलाकात हुई थी। उसी महफिल में नामवर सिंह, केदारनाथ अग्रवाल, रेखा व्यास और कई अन्य नामचीन साहित्यकार शामिल थे। तब, मैं गुरुकुल कांगड़ी में शोधार्थी था और इस महफिल में डॉ. अजय नावरिया के साथ शामिल हुआ था। मैंने और डॉ. अजय नावरिया ने शायद 2006 में जामिया मिलिया इस्लामिया में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर के पद के लिए एक साथ इन्टरव्यू दिया था। और भी बहुत सारे अभ्यर्थी थे, लेकिन चयन डॉ. अजय नावरिया का हुआ था। डॉ. नावरिया और मेरे जुड़ाव का मुख्य कारण कमलेश्वर जी थे। क्योंकि, हम दोनों का पीएचडी कमलेश्वर पर ही था। खैर, वो अलग बात है। उस रात मैंने महसूस किया था कि मंगलेश डबराल की विनम्रता में पहाड़-सी ऊँचाई और आँखों में समंदर-सी गहराई थी। वो जन-संवेदना, सामाजिकता की खोज और जन पीड़ा के कवि थे। मंगलेश जी की कविताओं में सामंती बोध एवं पूंजीवादी छल-छद्म दोनों का प्रतिकार है। वे यह प्रतिकार किसी शोर-शराबे के साथ नहीं, बल्कि प्रतिपक्ष में एक सुंदर सपना रचकर करते हैं। वे लोगों को सोशल मीडिया के खतरों से भी सचेत करते हैं। उनका सौंदर्यबोध सूक्ष्म है और भाषा पारदर्शी। वास्तव में वे एक उम्दा रचनाकार थे। वे नाजुक संदेह और चिंतित करने वाले कवि थे। हाल ही में 09 दिसम्बर, 2020 को उनका निधन हुआ है।

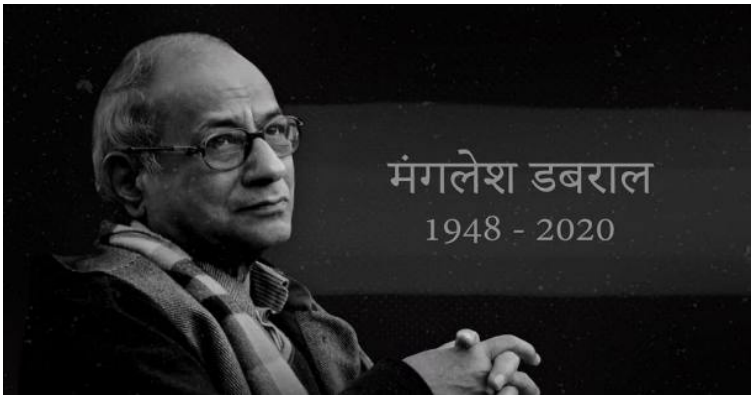

मंगलेश डबराल का जन्म 16 मई, 1948 को टिहरीगढ़वाल उत्तराखंड के कापफल पानी गाँव में हुआ और शिक्षा-दीक्षा देहरादून में हुई। दिल्ली आकर हिंदी पेट्रियट, प्रतिपक्ष और आसपास में काम करने के बाद भोपाल में भारत भवन से प्रकाशित होने वाले पूर्वग्रह में सहायक संपादक हुए। इलाहाबाद और लखनऊ से प्रकाशित अमृत प्रभात में भी कुछ दिन नौकरी की। सन1983 में जनसत्ता अखबार में साहित्य संपादक का पद संभाला। कुछ समय सहारा समय में संपादन कार्य करने के बाद वे नेशनल बुक ट्रस्ट से जुड़ गए।

मंगलेश डबराल के सात काव्य संग्रह हैं - पहाड़ पर लालटेन (1981), घर का रास्ता (1988), हम जो देखते हैं (1995), आवाज भी एक जगह है (2000), नए युग में शत्रु (2013), स्मृति एक दूसरा समय है (2020) और समय नहीं है (2020, अप्रकाशित)। गद्य संग्रह में 'लेखक की रोटी' और 'कवि का अकेलापन' प्रमुख हैं, उनके दो यात्रा वृत्तांत हैं एक 'सड़क एक जगह' और 'एक बार आयोवा' हैं।

उनके काव्य संग्रह 'हम जो देखते हैं' को 2000 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस काव्य संग्रह में संकलित कुल 57 कविताओं में प्रमुख हैं; घर शांत है, कुछ देर के लिए, अभिनय, दिल्ली में एक दिन, बाहर, बारिश, पिता की तस्वीर, दादा की तस्वीर, माँ की तस्वीर, अपनी तस्वीर, कागज़ की कविता, हाशिए की कविता, आइने, दिल्ली-एक, दिल्ली-दो,

परिभाषा की कविता, रात, चेहरा, उम्मीद, शेष जीवन है। उनके पहले काव्य संकलन 'पहाड़ पर लालटेन' में वसंत, आवाजें, किसी दिन, परछाई, अत्याचारियों की थकान, मकान, शहर-एक, शहर-दो, शब्द, गिरना आदि हैं। इस संकलन में कुल 40 कविताएँ शामिल हैं।

मंगलेश डबराल 1970 के दशक में एक कवि के रूप में उभरे। उनकी रचनाओं में आपातकाल द्वारा चिह्नित युग, नक्सलवाद की समस्या और छात्र जीवन की अशांति को स्पष्ट देखा जा सकता है। वे पूंजीवाद के अंतर्निहित आशंकाओं, मुक्त बाजार के भ्रम और खतरों से आगाह करते हुए देखे जा सकते हैं। डबराल जी ने सन 2002 के गुजरात दंगों के संदर्भ में कुछ बेहतरीन हिंदी कविताएँ लिखी थीं। उनकी कविता की भाषा राजनीति से भिन्न है। वह गुमराह नहीं करती है; बल्कि एक सही राह की ओर उंगली पकड़कर चलती है। उनके लिए कविता लोगों का उत्सव है; राजनीति अथवा किसी नेता की शरणस्थली नहीं। डबराल जी की कविता, राजनीति की भव्य क्रांतियों के बारे में नहीं है, बल्कि आम महिला और पुरुष के मौन दुखों को कहती है। मंगलेश डबराल की कविता 'गुजरात के मृतक का बयान' का एक अंश देखें जो वास्तव में पीड़ा से भरा हुआ है ;

पहले भी शायद मैं थोड़ा-थोड़ा मरता था
बचपन से ही धीरे-धीरे जीता और मरता था
जीवित बचे रहने की अन्तहीन खोज ही था जीवन
जब मुझे जलाकर पूरा मार दिया गया
तब तक मुझे आग के ऐसे
इस्तेमाल के बारे में पता भी नहीं था
मैं तो रँगता था कपड़े ताने-बाने रेशे-रेशे
चौराहों पर सजे आदमक़द से भी ऊँचे फ़िल्मी क़द
मरम्मत करता था टूटी-फूटी चीज़ों की
गढ़ता था लकड़ी के रँगीन हिण्डोले और गरबा के डाण्डिये
अल्युमिनियम के तारों से छोटी-छोटी साइकिलें बनाता
बच्चों के लिए
इसके बदले मुझे मिल जाती थी एक जोड़ी चप्पल, एक तहमद
दिन भर उसे पहनता, रात को ओढ़ लेता
आधा अपनी औरत को देता हुआ

ये काव्य पंक्तियां स्वयं में पूरी की पूरी कहानी बयाँ करती नजर आती हैं।

मंगलेश डबराल जी की क्षणिकाओं से पता चलता है कि उनके लिए कविता क्या है ? उनके लिए;

कविता दिन-भर थकान जैसी थी
और रात में नींद की तरह
सुबह पूछती हुई :
क्या तुमने खाना खाया रात को ?

वे जानते हैं कि पहाड़ का जीवन कोई सामान्य जीवन नहीं है। तभी वे कहते हैं कि-

पहाड़ पर चढ़ते हुए
तुम्हारी साँस फूल जाती है
आवाज़ भर्राने लगती है
तुम्हारा क़द भी घिसने लगता है
पहाड़ तब भी है जब तुम नहीं हो।

यह सब वही बता सकता है जिसने पहाड़ के साथ जीवन को जिया हो।उनकी पंक्तियाँ बहुत महत्वपूर्ण संदेश पाठकों के जहन में छोड़ जाती हैं। एक उदाहरण देखिए–

मैं देखता हूँ तुम्हारे भीतर पानी सूख रहा है
तुम्हारे भीतर हवा खत्म हो रही है
और तुम्हारे समय पर कोई और कब्ज़ा कर रहा है

समय पर कब्ज़ा करता हुआ कोई और नहीं डिजिटल हो रही दुनिया के बीच से सोशल मीडिया ने एक घुसपैठिये की तरह कब हमारे समय को चुरा लिया हमें पता ही नहीं चला और आदमी, आदमी से दूर होता चला जा रहा है।

वे अपनी 'त्वचा' नाम की कविता से समाज में व्याप्त खतरों की ओर इशारा करते दिखाई देते हैं उनके इशारों को समझने के लिए आदमी में आध्यात्मिकता के कुछ अंश का होना एक अनिवार्य शर्त है ;

त्वचा ही इन दिनों दिखती है चारों ओर
त्वचामय बदन त्वचामय सामान

त्वचा का बना कुल जहान
टीवी रात-दिन दिखलाता है जिसके चलते-फिरते दृश्य
त्वचा पर न्योछावर सब कुछ
कई तरह के लेप उबटन झाग तौलिए आसमान से गिरते हुए
कमनीय त्वचा का आदान-प्रदान करते दिखते हैं स्त्री-पुरुष
प्रेम की एक परत का नाम है प्रेम
अध्यात्म की खाल जैसा अध्यात्म
सतह ही सतह फैली है हर जगह उस पर नए-नए चमत्कार
एक सुंदर सतह के नीचे आसानी से
छुप जाता है एक कुरूप विचार
एक दिव्य त्वचा पहनकर प्रकट होता है मुकुटधारी भगवान

वे अपनी 'छुओ'नामक कविता में लिखते हैं-

इस तरह मत छुओ जैसे
जैसे भगवान, महंत, मठाधीश, भक्त, चेले
एक दूसरे के सर और पैर छूते हैं।
बल्कि ऐसे छुओ
जैसे लम्बी घासें चांद तारों को छूने-छूने को होती हैं।
अपने भीतर जाओ और एक नमी को छुओ
देखो वह बची हुई है या नहीं
इस निर्मम समय में।

वे वक्त की नब्ज को पकड़ कर चलते हैं और भरभराकर चूर-चूर होते समाज में नमी की खोज करते हैं, ताकि ये समाज रूपी घरौंदा गिर ना जाये। एक साहित्यकार का जो दायित्व है, वे उसे बखूबी निभाते हैं।

वे वर्तमान कविता के परिदृश्य में एक आत्मीय उजास की तरह मौजूद रहेंगे। उनकी लालटेन ने पहाड़ से उतरकर हिंदी-नीड़ के साथ-साथ वैश्विक भाषाओं तक पहुँच बनाई है। उनकी कविताओं में प्रेम है, पेड़ हैं, नदी है, पहाड़ है यानी सब कुछ समाहित हैं ;

प्रेम होगा तो हम कहेंगे कुछ मत कहो
प्रेम होगा तो हम कुछ नहीं कहेंगे
प्रेम होगा तो चुप होंगे शब्द
प्रेम होगा तो हम शब्दों को छोड़ आएँगे
रास्ते में पेड़ के नीचे
नदी में बहा देंगे
पहाड़ पर रख आएँगे।

डबराल जी वर्णों को एक नए स्वरूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं;

एक भाषा में अ लिखना चाहता हूँ
अ से अनार अ से अमरूद
लेकिन लिखने लगता हूँ अ से अनर्थ अ से अत्याचार
कोशिश करता हूँ कि क से क़लम या करुणा लिखूँ
लेकिन मैं लिखने लगता हूँ क से क्रूरता क से कुटिलता
अभी तक ख से खरगोश लिखता आया हूँ
लेकिन ख से अब किसी ख़तरे की आहट आने लगी है
मैं सोचता था फ से फूल ही लिखा जाता होगा
बहुत सारे फूल
घरों के बाहर घरों के भीतर मनुष्यों के भीतर
लेकिन मैंने देखा तमाम फूल जा रहे थे
ज़ालिमों के गले में माला बन कर डाले जाने के लिए

वे चंहुँ ओर व्याप्त अनर्थ, अत्याचार, क्रूरता, कुटिलता और खतरों को भांप लेते हैं और इशारे करते चलते हैं कि फूल पहने हुए जालिमों से सावधान रहें।

मंगलेश जी की कविताओं के भारतीय भाषाओं के अलावा कई विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। कविता के अतिरिक्त वे साहित्य, सिनेमा, संचार माध्यम और संस्कृति के सवालों पर नियमित अपनी कलम चलाते रहे। हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में उनकी घनीभूत रचनात्मक उपस्थिति सदैव रहेगी। उनकी कविताएँ उत्साहित और सक्रिय करती हैं, वे अपनी पीढ़ी के प्रतिनिधि कवि थे। उन्हें कोटि-कोटि नमन और विनम्र श्रद्धांजलि।

सहायक प्रबंधक (राजभाषा एवं जनसंपर्क),
वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, नागपुर – 440001

स्वास्थ्य चर्चा

राइनोप्लास्टी : नाक की कॉस्मेटिक सर्जरी

- डॉ. दीपक प्रकाश

नाक के आकार-प्रकार में परिवर्तन लाने के लिए की जानेवाली सर्जरी राइनोप्लास्टी सर्जरी कहलाती है। यह एक कॉस्मेटिक सर्जरी है। इसके माध्यम से नाक की बहुत सारी कमियां तथा गड़बड़ियां दूर की जाती हैं। दुर्घटना में क्षतिग्रस्त नाक को ठीक करने तथा जन्मजात गड़बड़ियों को दूर करने जैसी सर्जरी को छोड़कर बाकी सर्जरी नाक तथा चेहरे की सुंदरता बढ़ाने के लिए की जाती है। इसके माध्यम से अनियमित आकर की नाक की लंबाई को छोटी-बड़ी ही नहीं की जाती बल्कि कई तरह की विकृतियां भी दूर की जाती हैं। इतना ही नहीं इसके आकार को बदलने, नासिका छिद्र को छोटा करने से लेकर टिप को ऊपर करना आदि शामिल हैं। इस सर्जरी से चेहरे की खूबसूरती तो बढ़ती है, मरीज में आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

तेजी से बदलते फैशन तथा ग्लैमरस इंडस्ट्री ने युवाओं की जिंदगी, रहन-सहन तथा जीवनशैली को पूरी तरह प्रभावित किया है। आज की पीढ़ी अच्छा दिखने की लालसा के साथ-साथ लुक के प्रति भी काफी जागरुक हुई है और अच्छा, आकर्षक तथा आधुनिक दिखने के लिए कुछ भी करने को हमेशा तैयार है। वे जानते हैं कि अब व्यक्तित्व में बदलाव सफलता तथा कैरियर-ग्रोथ के लिए निहायत ही जरूरी है।

किसी भी शख्स के आत्मविश्वास के निर्माण तथा उसे बनाये रखने में कॉस्मेटिक सर्जरी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है और चेहरे की खूबसूरती बढ़ाने में राइनोप्लास्टी की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। मनोरंजन उद्योग के साथ-साथ कॉरपोरेट जगत में भी युवक-युवतियों को अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए पेशेवर मेक-ओवर कराने की सलाह दी जाती है, ताकि ऑफिस में उनकी परफारमेंस में इजाफा हो सके।

नाक चेहरे का महत्त्वपूर्ण अंग है। चेहरे की सुंदरता काफी हद तक इस पर निर्भर करती है। चेहरे की तुलना में नाक का आकार-प्रकार तथा लंबाई-चौड़ाई में समानता तथा आनुपातिक होना बहुत जरूरी है। नाक के आकार-प्रकार में परिवर्तन लाने के लिए की जानेवाली सर्जरी राइनोप्लास्टी सर्जरी कहलाती है। यह एक कॉस्मेटिक सर्जरी है। इसके माध्यम से नाक की बहुत सारी कमियां तथा गड़बड़ियां दूर की जाती हैं। दुर्घटना में क्षतिग्रस्त नाक को ठीक करने तथा जन्मजात गड़बड़ियों को दूर करने जैसी सर्जरी को छोड़कर बाकी सर्जरी नाक तथा चेहरे की सुंदरता बढ़ाने के लिए की जाती है। इसके माध्यम से अनियमित आकर की नाक की लंबाई को छोटी-बड़ी ही नहीं की जाती बल्कि कई तरह की विकृतियां भी दूर की जाती हैं। इतना ही नहीं इसके आकार को बदलने, नासिका छिद्र को छोटा करने से लेकर टिप को ऊपर करना आदि शामिल हैं। इस सर्जरी से चेहरे की खूबसूरती तो बढ़ती है, मरीज में आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

जब कोई कॉस्मेटिक सर्जन किसी मरीज की नाक की सर्जरी की प्लानिंग करता है तो यह देखा जाता है कि नाक की त्वचा मुलायम है या सख्त। मरीज क्यों सर्जरी करा रहा है और क्या चाहता है। चेहरे के आकार के हिसाब से नाक की पोजीशन क्या है? आपरेशन के बाद जैसा मरीज चाहता है,वैसा होना संभव है? और किस हद तक इसमें सफलता मिलने की गुंजाइश है? इन सारी बातों का ध्यान रखकर सर्जन सर्जरी करने की योजना बनाते हैं।

नाक का ऊपरी भाग हड्डी का बना होता है तथा आगे का हिस्सा कार्टिलेज का, जो मुलायम और लचीला होता है। राइनोप्लास्टी द्वारा विकृति के आधार पर ही, कार्टिलेज या फिर दोनों में बदलाव किया जाता है। इस सर्जरी में कईतरह के बदलाव किये जा सकते हैं; जैसे नाक के बेढ़ंगे तथा टेढ़े-मेढ़े ब्रिज यानी ऊपरी हड्डी को सीधा करने से लेकर नाक के अग्र भाग यानी टिप को नया आकार देने तक। छोटी नाक को बड़ा, अत्यधिक बड़ी नाक को छोटा तथा नाक एवं ऊपरी होंठ के बीच के कोण में भी परिवर्तन इस सर्जरी के माध्यम से किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त चोट लगने से विकृति आ जाने, जन्मजात विकृतियों के साथ-साथ सेप्टम की गड़बड़ी को भी दूर करना संभव है।

क्षतिग्रस्त नाक को ठीक करने का जिक्र ईसा से लगभग 600

साल पहले प्रकाशित सुश्रुत संहिता में मिलता है। यह चिकित्सा विज्ञान का लिखित प्रमाणित दस्तावेज है। उसके बाद, 1891 ई. में '**जान रो**' नामक अमेरिकी सर्जन ने नाक की खूबसूरती बढ़ाने के लिए आपरेशन की तकनीक विकसित करने का काम किया। चेहरे की तुलना में अत्यधिक बड़ी नाक के भीतर के कार्टिलेज को काटकर एक खूबसूरत आकार दिया था। लेकिन, नाक के ऊपर ऑपरेशन का निशान काफी भद्दा लग रहा था। इसलिए उनके इस प्रयास को वैज्ञानिकों ने विशेष तवज्जो नहीं दी। आपरेशन के निशान को ध्यान में रखकर सन 1986 ई. में एक जर्मन सर्जन '**जैकबजोसेफन**' ने नाक के भीतरी हिस्से में चीरा लगाकर आपरेशन करने में सफलता पायी। नाक को खूबसूरत बनाने वाली यह तकनीक बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक प्रामाणिक मानी जाती रही है और कॉस्मेटिक के दृष्टिकोण से इसी 'क्लोजसर्जरी' की विधि से नाक का आपरेशन होता रहा।बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही एंडरसन, जानसन, टॉरियुमी, गुंटर, रोहचिक तथा जूरी नामक कॉस्मेटिक सर्जनों के कारण ओपन सर्जरी को दुबारा ख्याति मिली। इन लोगों ने नाक के दोनों ओर के साथ-साथ बाहर भी एक चीरा लगाकर सर्जरी की नयी तकनीक विकसित की।

सर्जरी के प्रकार

आजकल राइनोप्लास्टी दो विधियों से की जा सकती है।नाक की बाहरी त्वचा पर चीरा लगाकर जिसे '**ओपन एप्रोच**' कहा जाता है और दूसरा '**क्लोज्ड एप्रोच**'जिसमें नाक के छिद्र के अंदर चीरा लगाया जाता है। ऐसा करने से नाक की दोनों ओर की त्वचा में उभार होने से नाक की खूबसूरती काफी बढ़ जाती है।

उक्त दोनों विधियों के अलग-अलग फायदे-नुकसान हैं।ओपन एप्रोच में नाक के अंदर के सपोर्टिव फ्रेमवर्क को बिना कोई नुकसान पहुंचाये परिवर्तित किया जा सकता है, जबकि क्लोज्ड विधि में यह संभव नहीं है। ओपन तकनीक में भीतरी गड़बड़ियों की पहचान आसान हो जाती है तथा हड्डी तथा कार्टिलेज को काटने, छांटने तथा तराशने में भी आसानी होती है। इस विधि मेंअंदर की हड्डियों की रचना को आसानी से सुंदर आकार दिया जा सकता है। इसके साथ-साथ कार्टिलेज को ग्राफ्ट करने में भी आसानी हो जाती है।जबकि क्लोज्ड पद्धति में सर्जन की बहुत सारी सीमाएं होती हैं। नाक के छिद्र के भीतरी हिस्से के सहारे ही सर्जरी करने के लिए जगह कम मिल पाने या सीमित जगह के कारण सर्जिकल उपकरणों के साथ सर्जन को सर्जरी करने में काफी कठिनाई होती है।

नाक को सुंदर बनाने के लिए ओपन तकनीक आजकल ज्यादा लोकप्रिय है। ओपन तकनीकके दौरान सर्जन को काफी सहूलियत मिल जाती है तथा सर्जरी के बाद रचनात्मक परिवर्तन में स्थायित्व आता है। जब नाक में बड़े बदलाव की जरूरत पड़ती है, तो ओपन एप्रोच को ही अपनाया जाता है।

नाक की कॉस्मेटिक सर्जरी अर्थात राइनोप्लास्टी का अच्छा परिणाम कई बातों पर निर्भर करता है। इसमें नाक की हड्डी की रचना, त्वचा की बनावट तथा साफ्ट-टिस्यू की भी अहम भूमिका होती है।

कब कराना चाहिए

छोटे बच्चों को नाक की कॉस्मेटिक सर्जरी नहीं की जाती, क्योंकि इस उम्र में हड्डियों का विकास हो रहा होता है। लड़कियों को 14-15 वर्ष तथा लड़कों को 17-18 वर्ष के बाद ही कराना चाहिए। इस उम्र तक आते-आते नाक की हड्डियां मजबूत तथा परिपक्व हो जाती हैं और नाक का आकार-प्रकार स्थायी हो जाता है।लगभग सभी मरीज ऐसी सर्जरी की उम्मीद करते हैं जो देखने में प्राकृतिक तथा वास्तविकता का आभास कराये। यह जानकारी सर्जरी के पहले सर्जन के लिए जरूरी है कि मरीज आखिर चाहता क्या है। वह कैसी नाक की उम्मीद कर रहा है। लेकिन, सर्जन का यह कर्तव्य होता है कि मरीज को यह भी बताये कि कॉस्मेटिक सर्जरी में वैसा संभव है या नहीं जो वे चाहते हैं। इसलिए सर्जन तथा मरीज दोनों को इस संबंध में साफ-साफ बात कर लेनी चाहिए।

सर्जरी के पहले

राइनोप्लास्टी कराने को इच्छुक मरीज को कॉस्मेटिक सर्जन से मिलकर बताना होता है कि आप अपनी नाक में क्या परिवर्तन चाहते

हैं अर्थात आप कैसी नाक चाहते हैं? सर्जन त्वचा, नाक की रचना तथा चेहरे का अध्ययन कर यह निर्णय लेते हैं कि राइनोप्लास्टी सर्जरी के द्वारा आपकी इच्छा की पूर्ति हो सकती है या नहीं। यदि हां तो किस हद तक। यदि सर्जन द्वारा समझायी गई बात से मरीज सहमत हो जाता है और उसको लगने लगता है कि सर्जन द्वारा बतायी गयी विधि से मेरा उद्देश्य पूरा हो जायेगा तो वह सर्जरी के लिए हामी भरता हैऔर सर्जरी की प्रक्रिया आगे बढ़ायी जाती है।

सर्जरी के पहले सर्जन मरीज को कुछ हिदायत देते हैं जैसे कि स्मोकिंग छोड़ने स्प्रीन नामक दवा न लेना आदि। स्प्रीन से ब्लीडिंग रुकने तथा स्मोकिंग से घाव ठीक होने में समय लगता है।सर्जरी के पहले चेहरे के फोटोग्राफ भी लिए जाते हैं ताकि सर्जरी के बाद तुलना कर यह जाना जा सके कि कितना फायदा हुआ है।

कैसे की जाती है सर्जरी

राइनोप्लास्टी के लिए लोकल या सामान्य एनेस्थेसिया दिया जाता है। यह सर्जरी की जटिलता पर निर्भर करता है। यदि छोटी जगह में परिवर्तन लाना हो तो बिना बेहोश किये ही मरीज को बैठी हुई स्थिति में सर्जरी की जाती है।नाक की अधिकतर सर्जरी आउटडोर आधार पर की जाती है। खासकर छोटी सर्जरी के लिए यह विधि अपनायी जाती है। बड़ी सर्जरी के लिए मरीज को पूरी तरह बेहोश किया जाता है।

बेहोश करने या स्थानीय त्वचा सुन्न करने के बाद क्लोज्ड विधि से सर्जरी करने के लिए नाक के नासिका छिद्र के भीतर चीरा लगाकर त्वचा को हड्डी,कार्टिलेज तथा म्युकस मेंब्रेन को अलग किया जाता है। उसके बाद हड्डी या कार्टिलेज बड़ी तथा टेढ़ी-मेढ़ी है तो उसे काट छांट कर छोटा कर एक आकार दिया जाता है।ऐसा बड़ी तथा बेढंगी नाक को छोटा करने लिए किया जाता है। छोटी नाक को बड़ा करने के लिए की जा रही सर्जरी में नाक की हड्डी या कार्टिलेज को ऊपर की ओर उठाया जाता है।कई बार इसके लिए कान के कार्टिलेज या इंप्लांट अथवा ग्राफ्ट का प्रयोग किया जाता है।बोन-ग्राफ्ट के लिए कृत्रिम ग्राफ्ट या शरीर के दूसरे हिस्से की हड्डी इस्तेमाल की जाती है।

सर्जरी के बाद मरीज को 24 घंटे के लिए रिकवरी रूम में सर को छाती से उंचा कर लिटाया जाता है ताकि ब्लीडिंग और सूजन में कमी आ सके।

सर्जरी के बाद सूजन के कारण नाक बंद हो जाने से थोड़ी परेशानी हो सकती है। अधिकतर स्थितियों में नाक में एक से सात दिनों तक पैकिंग कर छोड़ दिया जाता है।कई सर्जन नाक के ऊपर स्पिलिंट या प्लास्टर लगा देते हैं। ऐसा सुरक्षा तथा सपोर्ट के लिए किया जाता है।प्लास्टर या स्पिलिंट लगभग एक सप्ताह तक रखा जाता है।

कुछ दिनों तक थोड़ी ब्लीडिंग,पानी जैसा तरल पदार्थ या जमा रक्त का थक्का निकल सकता है। यह स्थिति ड्रेसिंग के बाद आती है। समय बीतने के साथ ये लक्षण स्वतः समाप्त हो जाते हैं।

यह भी जानना जरूरी

- यह एक वैकल्पिक अथवा चयनात्मक सर्जरी है, जिसके द्वारा टेढ़ी-मेढ़ी व चपटी, जरूरत से ज्यादा बड़ी और बेढंगी नाक को एक आकार दिया जाती है। इसका उद्देश्य खूबसूरती बढ़ाना होता है न कि सामान्य रचना में परिवर्तन कर बदसूरत बनाना। सर्जरी करने का निर्णय लेने के पहले आश्वस्त होना जरूरी है कि ऐसा करने पर न तो जटिलताएं आयेंगी और न ही परिणाम में कोई कमी होगी।

- कभी-कभी पहली बार यानी प्राइमरी ओपरेटिव सर्जरी का परिणाम संतोषजनक नहीं होता।ऐसी स्थिति में मन माफिक परिणाम के लिए दुबारा सर्जरी (सेकेंडरी राइनोप्लास्टी) करने की जरूरत पड़ती है। नाक में बदलाव करने में सर्जन को तब परेशानी होती है, जब नाक की रचनामें ज्यादा जटिलताएं होती हैं। दूसरी बार सर्जरी करने में परेशानियां और ज्यादा बढ़ जाती है।

- राइनोप्लास्टी की सफलता तथा अच्छे परिणाम के लिए ध्यानपूर्वक जांच-पड़ताल तथा विस्तृत योजना की जरूरत पड़ती है।

- मरीज को मानसिक, मनोवैज्ञानिक एवं चिकित्सकीय रूप से तैयार होना चाहिए। सर्जरी की भी सीमाएं है,इस हकीकत को भी मरीज को जानना और समझना होगा। आपरेशन के दौरान व्यावहारिक कठिनाइयों का भी पता लगा लेना जरूरी है।

जोखिम घटक

राइनोप्लास्टी में भी वे सारे जोखिम घटक शामिल हैं, जो दूसरी सर्जरी के होते हैं- जैसे ब्लीडिंग, संक्रमण तथा दवाओं का कुप्रभाव। इनके प्रतिकूल परिणाम (साइड-इफेक्ट्स)भी समान होते हैं। इसके साथ, प्लास्टिक सर्जरी से संबंधित बाकी जोखिम भी लगभग समान होते हैं, जैसे रक्त नलिकाओं के फटने के कारण लाल स्पॉट तथा छोटा निशान बनना। इसके लिए कई बार भविष्य में पुनः रिविजन अर्थात सेकेंड प्रोसिड्योर करने की जरूरत पड़ सकती है।

रिविजन राइनोप्लास्टी

राइनोप्लास्टी के दौरान सर्जन से किसी प्रकार की गलती हो जाती है या मरीज सर्जरी के परिणाम से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो पाता है, तो सर्जन को रिविजन सर्जरी करने की जरूरत पड़ती है। यहां यह बताना जरूरी है कि रिविजन सर्जरी उसी हालत में की जाती है, जब पहले की गयी सर्जरी का घाव पूरी तरह भर जाता है। इसके लिए मरीज को कुछ दिनों के लिए छोड़ा जाता है। अतः रिविजन सर्जरी तुरंत नहीं की जा सकती है। यहां यह भी जान लेना जरूरी है कि रिविजन सर्जरी के बाद अधिकतर स्थितियों में अपेक्षित परिणाम मिलता है और मरीज पूरी तरह से संतुष्ट भी हो जाता है।

सावधानियां

सर्जरी के बाद कुछ सप्ताह तक मरीज को कई तरह की सावधानियां बरतने की सलाह दी जाती है जिनका पालन कठोरता से करना होता है।जैसे-

- एरोबिक एक्सरसाइज तथा जॉगिंग से बचे।
- तैरना मना है।
- नाक जोर से न साफ करें।
- खाने में वैसी चीजें न खायें, जिन्हें अत्यधिक चबाना पड़े।
- अत्यधिक जोर से चीखना, चिल्लाना हंसना या मुस्कराना। ऐसा करने से नाक से रक्तस्राव हो सकता है।
- धीरे-धीरे ब्रश करें, ताकि ऊपरी होंठ में ज्यादा हलचल न हो।
- कपड़ा पहनते या उतारते व सावधानी बरतें। ध्यान रहे कपड़े नाक पर रगड़ें नहीं।
- कम से कम एक माह तक धूप का चश्मा या पावर वाला चश्मा न पहनें। अन्यथा नाक पर दबाव पड़ेगा।
- कम से कम दो से तीन माह तक धूप से बचें। अत्यधिक धूप से आपकी नाक की त्वचा का रंग स्थायी रूप से परिवर्तित हो सकता है।
- दो से तीन सप्ताह तक नाक में सूजन तथा आंख के ऊपर की त्वचा का रंग नीला या काला हो सकता है। बहुत कम मामलों में छह माह तक देखने को मिलता है। और सूजन पूरी तरह ठीक होने में साल भर भी लग सकता है। आंख के नीचे की त्वचा पर आइस-पैक या कोल्ड कंप्रेशन करने पर सूजन में फायदा मिलता है। चूंकि घाव सूखने की प्रक्रिया धीमी गति से होती है अतः सर्जरी के बाद नाक को पूरी तरह ठीक होने में साल भर लग जाता है।

सेवानिवृत्त चिकित्सक
केंद्रीय अस्पताल, भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

हमारा झारखंड

झारखंड : व्यापक औद्योगिक संभावनाओं वाला राज्य

- अभिषेक डे

झारखंड भारत का 28वां राज्य है। रांची इसकी राजधानी है। झारखंड की सीमाएं उत्तर में बिहार, पश्चिम में उत्तर प्रदेश एवं छत्तीसगढ़, दक्षिण में ओडिशा और पूर्व में पश्चिम बंगाल को छूती है। संपूर्ण प्रदेश छोटानागपुर के पठार पर अवस्थित है। झारखंड वनों के अनुपात में एक अग्रणी राज्य माना जाता है। बिहार के दक्षिणी हिस्से को विभाजित कर इस प्रदेश का निर्माण किया गया था और 14 नवंबर, 2000 को संघ के 28 वें राज्य के रूप में झारखंड अस्तित्व में आया। झारखंड प्रदेश का निर्माण किया गया था। इस प्रदेश में चार बड़े शहर हैं –रांची, जमशेदपुर, धनबाद और बोकारो।

यह आदिवासियों की गृहभूमि है, जिसका सपना वे सदियों से देख रहे थे। एक गाथा के अनुसार, ओडिशा के राजा जयसिंह देव ने तेरहवीं शताब्दी में स्वयं को झारखंड का शासक घोषित कर दिया था। झारखंड में मुख्य रूप से छोटा नागपुर पठार और संथाल परगना के वन क्षेत्र शामिल हैं। यहां की विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराएं हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के युग में झारखंड मुक्ति मोर्चा ने नियमित आंदोलन किया, जिसकी वजह से सरकार ने 1995 में झारखंड क्षेत्र स्वायत्त परिषद की स्थापना की और अंततः पूर्ण राज्य अस्तित्व में आया।

झारखंड का इतिहास देखें तो इसके हजारीबाग जिले में 5000 वर्ष पुराने अवशेष प्राप्त हुए हैं। 325 ईसापूर्व में यह मौर्य साम्राज्य का हिस्सा हुआ करता था। मध्यकाल में इस क्षेत्र में चेरों और नागवंशीराजाओं का शासन था।आधुनिक काल में सन् 1765 के बाद यहां ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव पड़ा। प्रदेश में अंग्रेजों के खिलाफ बहुत से विद्रोह हुए, जिनमें- पहाड़िया विद्रोह (1772-1780), मुंडा विद्रोह (1800-1802), लार्डकार्नवालिस के खिलाफ संथालों का विद्रोह, खड़िया विद्रोह एवं बिरसा मुंडा के नेतृत्व में मुंडा विद्रोह(1895-1900)प्रमुख हैं।

भौगोलिक स्थिति एवं जलवायु:

इसका ज्यादातर हिस्सा छोटानागपुर पठार का हिस्सा है जो कोयल, दामोदर, ब्राह्मणी, खड़कई एवं स्वर्णरेखा नदियों का उद्गमस्थल भी है। इन नदियों के जल क्षेत्र ज्यादातर झारखंड में ही हैं। प्रदेश का बहुत बड़ा इलाका वन से ढका हुआ है। मिट्टी के वर्गीकरण के अनुसार, क्षेत्र की ज्यादातर भूमि चट्टानों एवं पत्थरों के अपरदन से बनी है जिन्हें इस प्रकार उप-विभाजित किया जा सकता है:

- लाल मिट्टी -ज्यादातर दामोदर घाटी एवं राजमहल के क्षेत्रों में पायी जाती है।
- माइका युक्त मिट्टी - कोडरमा, झुमरीतिलैया, बड़कागांव एवं मंदार पर्वत के आस-पास के क्षेत्रों में पायी जाती है।
- बलुई मिट्टी -ज्यादा तरह हजारीबाग एवं धनबाद क्षेत्र की भूमि में पायी जाती है।
- काली मिट्टी - राजमहल क्षेत्र में पाई जाती थी।
- लैटेराइट मिट्टी - रांची के पश्चिमी हिस्से पलामू संथाल परगना के कुछ क्षेत्र एवं पश्चिमी एवं पूर्वी सिंहभूम में पायी जाती है।

अर्थव्यवस्था :

झारखंड की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से खनिज और वन संपदा से निर्देशित है। लोहा, कोयला, माइका, बाक्साइट, फायरक्ले, ग्रेफाइट, क्यानाइट, सेलीमाइट, चूनापत्थर, यूरेनियम और दूसरी खनिज संपदाओं की प्रचुरता की वजह से यहां उद्योग धंधों का जाल बिछा

है। खनिज उत्पादों के खनन से झारखंड को सालाना लगभग तीस हजार करोड़ रुपये की आय होती है। झारखंड अपने खनिजों को न केवल अपने उद्योग-धंधों में इस्तेमाल करता है बल्कि दूसरे राज्यों को भी आपूर्ति करता है। 2000 में बिहार से विभाजन के पश्चात 2004 में झारखंड का जीडीपी 14 मिलियन डॉलर आंकी गयी थी।

झारखंड में भारत के कुछ सर्वाधिक औद्योगिकृत स्थान यथा- जमशेदपुर, रांची, बोकारो एवं धनबाद आदि स्थित हैं। कुछ प्रमुख उद्योगों इस प्रकार हैं:

- भारत का सबसे बड़ा उर्वरक कारखाना सिंदरी में स्थित था, जो अब बंद हो चुका है।
- भारत का पहला और विश्व का पांचवा सबसे बड़ा इस्पात कारखाना टाटा स्टील जमशेदपुर में हैं।
- एक अन्य बड़ा इस्पात कारखाना बोकारो स्टील प्लांट बोकारो में हैं।
- भारत का सबसे बड़ा आयुध कारखाना गोमिया में।
- मीथेन गैस का पहला प्लांट।

जब अलग राज्य बना, तब माना जा रहा था कि देश के 40 प्रतिशत खनिज अपनी गोद में रखने वाले झारखंड में औद्योगिक क्रांति आ जायेगी। सरकार ने कभी इसे पूरे एशिया का इंडस्ट्रियल हब बनाने की परिकल्पना की थी जो आज तक महज कल्पना ही है। झारखंड के बारे में माना जाता था कि इस राज्य में बड़े-बड़े उद्योग लगेंगे और रोजगार सृजन होगा, राज्य की आर्थिक उन्नति होगी और राज्य से बाहर पलायन नहीं करना होगा। तब झारखंड की पहचान औद्योगिक क्षेत्र में एशियन टाइगर के रूप में की जा रही थी। आज हकीकत सबके सामने हैं। झारखंड निरंतर पलायन का दंश झेल रहा है।

धीरे-धीरे झारखंड एशियन टाइगर बनने के अपने सपने से दूर होता चला गया। ऐसा नहीं था कि झारखंड को निवेश का प्रस्ताव नहीं मिला। औद्योगिक नीति 2001 बनने के बाद से झारखंड में निवेश के प्रस्तावों की झड़ी लग गयी थी। वर्ष 2001 से लेकर 2015 तक प्रदेश को 91 बड़े उद्योगों द्वारा 3.86 लाख करोड़ रुपये के निवेश के प्रस्ताव मिले। जहां एक ओर आर्सेलर मित्तल से लेकर आदित्य बिड़ला ग्रुप, टाटा ग्रुप, जिंदल स्टील एंड पावर,जेएसडब्ल्यू जैसी बड़ी कंपनियों ने निवेश प्रस्ताव दिये वहीं खनन क्षेत्र में भी बड़े निवेश के प्रस्ताव आए, लेकिन कुछ नीतियों के कारण राज्य में बड़े उद्योग नहीं लग सके। आर्सेलर मित्तल जैसी कंपनी ने 40 हजार करोड़ रुपये के निवेश का प्रस्ताव दिया था, जिसमें 10 एमटी क्षमता का स्टीलप्लांट लगाना था, लेकिन यह नहीं हो सका। वहीं कुछ बड़ी कंपनियां जमीन की वजह से, तो कुछ खनन की वजह से नहीं लग सकीं।

इसके बाद वर्ष 2017 में दूसरे दौर के निवेश का प्रयास करते हुए मोमेंटम झारखंड का आयोजन किया गया, जिसमें 210 कंपनियों ने 3.41 लाख करोड़ रुपये के निवेश के लिए समझौता किया। सरकार ने ग्राउंड ब्रेकिंग कर बड़ी संख्या में कंपनियों को जमीन भी दे दी। इसमें कुछ उद्योग लगे और कुछ लगने की प्रक्रिया में है, तो कुछ लगने के बाद अब कारोबार समेटने की प्रक्रिया में है। झारखंड में उद्योग-धंधे लगे, इसके लिए सरकार ने सिंगल विंडो सिस्टम की शुरूआत की थी परंतु सरकार की यह महत्वाकांक्षी योजना भी पूरी तरह सफल नहीं हो सकी। इस योजना के तहत कुल 370 एमओयू हुए जिनमें लगभग 7 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव तथा 7,42,583 लोगों के लिए संभावित रोजगार प्रस्तावित थे। इनमें से केवल 161 एमओयू योजनाएं ही धरातल पर उतर सकीं। राज्य सरकार रुग्ण उद्योग को पुनर्जीवित करने तथा राज्य के अन्य पिछड़े इलाकों में उद्योग-धंधों के विकास के लिए भी सतत प्रयत्नशील है।

प्राकृतिक रूप से प्रचुर खनिज संपदा वाले राज्य झारखंड में निवेशक दिल खोलकर उद्योग-धंधे लगाने के लिए तैयार हैं, किंतु सरकार की कुछ नीतियों और कुछ स्थानीय समस्याओं के चलते सशंकित हो जाते हैं। निवेशक कहते हैं कि झारखंड में निवेश की अपार संभावना हैं। लेकिन राज्य को अपनी भूमि और खनन नीति में दृढ़ इच्छाशक्ति दिखानी होगी, तभी राज्य में उद्योग लग सकेंगे।

लिपिक
वीआईपी प्रकोष्ठ, कोयला भवन मुख्यालय

कहानी

अव्यक्त संवेदना

- कृष्ण मनु

आह! उफ्फ !!

उसने शरीर को ऊपर की ओर सरकाया है। ऐसा करते ही उसके शरीर के पोर-पोर से दर्द उठ आया है। जैसे हजारों बिच्छुओं के डंक एक साथ चुभे हों। ताजे घाव के दर्द को उसने होंठों के भीतर ही दबा लेना चाहा है। इस प्रयास में उसका चेहरा लाल हो गया है। ललाट और कनपटी की नसें फूल गयी हैं। फिर भी 'आह!' निकल पड़ी है।

एक बीघा में फैली बाबूसाब की हवेली। हवेली से सटे पूरब की तरफ लम्बा-चौड़ा बगीचा। बगीचे के पूरब-दक्षिण कोने पर बना दो कोठरियों का एक झोपड़ा। यही झोपड़ा बाबूसाब के चार घरेलू नौकरों के रात बिताने का ठौर था....सिर्फ रात बिताने का। दिन में झोपड़े की तरफ नजर उठाना भी गुनाह था। बाबूसाब की सख्त हिदायत थी। केवल विशेष परिस्थितियों में छूट थी। बीमार होकर खटिया पकड़ लेने पर या फिर हाथ गोड़ टूटने पर। जब बाबूसाब के लिए कोई नौकर नकारा हो जाए तब दिन में वह झोपड़े में शरण ले सकता है। बाबूसाब का कोड़ा आये दिन उसकी चमड़ी उधेड़ता रहता है। तब उसके बेहोश लस्त-पस्त शरीर को उठाकर झोपड़े में घास-भूसे की बोरी की तरह फेंक दिया जाता है।

आज भी उसके शरीर की चमड़ी उधड़ी है और दिनों से घाव कुछ ज्यादा गहरा है। बाबूसाब का गुस्सा जितना ऊँचा होता है, उनके द्वारा दिया घाव उतना ही गहरा होता है।आज घावों की गहराई पिछले घावों से अधिक गहरी है। यही कारण है कि बाबूसाब की मार खा-खाकर घठा जाने के बावजूद वह आज दर्द दबा नहीं पा रहा है।

कई घंटे नीम बेहोशी में पड़े रहने के बाद जब तबीयत थोड़ा संभली थी तब कोठरी के बाहर ताकने की उसकी इच्छा हुई थी। घावों के दर्द से अधिक बेचैनी उसे बाहर की स्थिति जान लेने की थी। क्या समय हुआ है? बाहर का मौसम कैसा है? क्यों इतना सन्नाटा है? बाबूसाब वापस लौटे कि नहीं ? न घोड़ों की हिनहिनाहट, न किसन दद्दाके पैरों के धप्प-धप्प की आवाज ? कुछ भी तो नहीं। रेलगाड़ी तो कब की आकर जा भी चुकी होगी। अब तक रग्घू कक्का को बग्घी लेकर आ जाना चाहिए था। क्यों नहींआये ? अंधेरी कोठरी में वह सोचने लगा था। कई सवाल एक साथ उसके मस्तिष्क को झिंझोड़ने लगे थे। उसने कान बाहर की ओर देकर वातावरण की टोह भी लेने की कोशिश की थी। कुछ पता नहीं चलने पर बेचैनी कुछ अधिक बढ़ गई थी। बढ़ती बेचैनी के साथ-साथ उसको अधीरता भी बढ़ती जा रही थी।।

जब शरीर निश्चेष्ट हो जाता है तो मस्तिष्क की सक्रियता अधिक बढ़ जाती है। उसका मस्तिष्क भी काफी सक्रिय हो गया था। ट्रेन. .बग्घी...रग्घू कक्का से होते हुए उसकी सोच सरिता मंइयां साब पर टिक गयी थी। तब उसकी उत्कंठा और बढ़ गयी थी। वह और अधिक बेचैन हो उठा था। वह भूल गया था अपने शरीर की पीड़ा को। वह कोठरी की जमीन पर जहां पड़ा था, वहां से दरवाजे के बाहर देखने के लिए उसे ऊपर की तरफ सरकना जरूरी हुआ था। उत्कंठा की झोंक में ज्योंही वह ऊपर की तरफ सरका था, उसका शरीर हिला था। पीड़ा की लहर उठी थी। वह दर्द से दुहरा हो गया था। होंठों को दबाने के बावज़ूद आह निकल पड़ी थी।

पीड़ा की लहर जितनी तेजी में उठी है, उतनी तेजी से शांत भी हो गयी है। राहत मिली है उसे। साथ में इत्मीनान भी कि अब वह कोठरी से बाहर देख सकेगा। बाहर की हलचलों से अवगत हो सकेगा। हवेली में आने जाने वाले मेहमानों को देख सकेगा। आ चुके अथवा

आ रहे मेहमान की कल्पना मात्र से ही उसके भीतर कुछ उमड़ने - घुमड़ने जैसा महसूस होने लगा है। दिल और तेजी से धड़कने लगा है। गले में भी कुछ अटकने सा लगा है। उसके भीतर ऐसा क्यों होने लगा है ? वह समझ नहीं पा रहा है। सरिता मंइयां साब बहुत दिनों बाद आज आ रही हैं, शायद इसीलिए। वह अनुमान लगाने लगा है।

सरिता मंइयां साब शहर से आतीं भी तो बहुत-बहुत दिनों बाद हैं। पढ़ती हैं। केवल लम्बी छुट्टियों में आती हैं। अनायास उसकी चिंतन धारा मंइयां साब की ओर मुड़ गयी है। अच्छा लग रहा है मंइयां साब के बारे में सोचना। उसकी आंखें दरवाजे के बाहर लगी रहती हैं। बाहर से बाहर....सामने के कुआं और बरगद के पुराने झमठगर पेड़ से भी आगे। पेड़ के बगल में मरकर चित्त हुए सांप की तरह कई घुमाव लेती कच्ची-पक्की सड़क पर भी उसकी आंखें बिछी हैं। उसकी आंखें उस पुलिया पर चिपक गई हैं जहां से आगे देखना संभव नहीं है।

पुलिया के आगे सड़क ऊपर की ओर उठकर नहर पर चढ़ जाती है फिर नीचे की ओर ढलकर आंखों से ओझल हो जाती है। लेकिन क्या उसकी आंखें उस दृश्य तक ही बिछीं हैं? नहीं। उसकी आंखें उस अदृश्य तक को देख रही हैं जहां सड़क पहुंचकरअपना अस्तित्व समाप्त कर देती है। उस स्टेशन तक....स्टेशन के ठीक बाहर उस विशाल पीपल के पेड़ तक को उसको आंखें देख रही हैं, जिसकी सघन छांव के नीचे कई सवारियां-बैलगाड़ी, टमटम, एक्का रेलगाड़ी से उतरने वाली सवारियों के इंतजार में खड़ी रहती हैं। उसकी नजर का दायरा वहीं तक सीमित नहीं है। वह देख रहा है - ट्रेन रुकी है। यात्री उतर रहे हैं। बाबूसाब एक हाथ से पके मूँछों को उमेठते, दूसरे हाथ में पकड़े चांदी मढ़े बेंत की छड़ी प्लेटफार्म पर टिकाते पहले दर्जे की ओर तेजी से बढ़े हैं। पीछे-पीछे रग्घू कक्का दौड़ रहे हैं। जल्दी करनी है। छोटे स्टेशन पर एक्सप्रेस गाड़ी अधिक देर तक नहीं रुकती। खिड़की से एक गोरा चिट्टा, सुडौल, माखन जैसा कोमल हाथ बाहर निकला है। फिर... फिर....

अचानक वह हांफने लगा है। चेहरा पसीने से भीग गया है। उसे आस-पास की कुछ खबर नहीं है। बीड़ी का कसैला धुआं नथुनों में घुस आने से वह थोड़ा चैतन्य हुआ है। उसकी आंखें अब भी नहर के पास वाली पुलिया पर चिपकी हैं। कोठरी के भीतर किसी के होने का आभास हुआ है। उसे पता है, किसन दद्दा हैं। किसन दद्दा...हड्डियों का ढांचा....झुलसी हुई काली चमड़ी से मढ़ा हुआ ढांचा। कंधे पर मैली गमछी। काफी उमर हो गई है उनकी। माटी की दीवार से उठंगे पता नहीं कब से बीड़ी फूंक रहे हैं। बीड़ी का तीखा धुआं झेल नहीं पाते अब। सुट्टा लगाते ही खांसने लगते हैं। फिर भी, दिन भर बीड़ी का सुट्टा लगाते ही रहते हैं।

जलकर छोटी हुई बीड़ी का आखिरी लम्बा सुट्टा लगाकर किसन दद्दा ने टुकड़ा फेंका है। खांसी का भभका उठा है। वे देर तक खाँसते चले जाते हैं। खाँसते हुए उन्होंने कहा है-"का रे तिलका, दिन में सपनाते हो का ? हम इहां आधा घंटा से बैठे हैं आऊ ई ससुरा गुल्लर जइसन आंख से दिने में सपना देखता है। सुतल था का रे ? जगले में कहीं कोय जोर-जोर से सांस लेने लगता है आऊ सौंसे चेहरा पर पसेना आ जाता है। की सोच रहा है? एकटके देख रहा है सड़किया पर। कऊन सगा है तोर जो आने वाला है ?

उसने जोर की उसांस भरी है। किसन दद्दा की किसी बात का वह बुरा नहीं मानता। "कौन सगा है उसका?"ठीक ही तो कहा है दद्दा ने। एक दद्दा ही तो हैं जो बाप की तरह उसे साथ में सुलाये हैं, साथ में नहाये-धुलाये हैं। मां की तरह पूछ-पूछ कर खिलाये हैं। हवेली से चुराकर दूध और मिठाई खिलाये हैं। बुखार लगने पर डॉक्टर को दिखाये हैं। किसन दद्दा ने सारा कुछ मां-बाप की तरह किया है।

'ले जल्दी कर। गटागट करके पूरा गिलास खाली कर दे। हरदी मिला के दूध लाये हैं। समूचा दरद भगा देगा। 'किसन दद्दा के हाथ में कांसे का लम्बा गिलास है दूध से लबालब भरा हुआ है।

वह दूध पीने लगा है। उसको आंखों में नमी आ गई है। किसन दद्दा बड़बड़ा रहे है – 'ओह, केतना निरदयता से कोड़ा बरसाया है देह पर। पीछे के सौंसे चमड़ा फट गया है। मांस तक उखड़ गया है। ई बाबू सबवा को जरा भी रहम है? अस्सी साल में भी अरना भैंसा जैसा ताकत है ससुरे की। अरे, हम तो कहते हैं ई निरदयवा के हण्टर खाने मे अच्छा है तू कहीं भाग जा रे तिलुआ। जबान जहान है, हाथ गोड़ सलामत हैं। पेट कहीं भी भर लेगा। फिर काहे सूगर डांगर जैसा कुटवाता है रे अपनी देह को? दो कौर मट्ठा भात के लिए, कि दो सुखड़ी रोटी के लिए ?'

वह चुप है। किसन दद्दा का बड़बड़ाना अचानक रुक गया है। बाहर से कुछ आहट सुनाई दी है। दद्दा जल्दी से गिलास गमछे में छिपाकर कोठरी से निकल पड़े हैं। जाते-जाते बड़बड़ा गये हैं-"अरे, ई बाबूसबवा हम पर कम जुलम ढाया है। तेल पिलावल लाठी तोड़ दिया है पीठ पर। केतना बार भागने का मन बनाया, कई मरतबा भाग भी गया लेकिन फिर लौटकर चला आया। मालकिन एतने न मानती थी कि दूसरी जगह मन नहीं लगता था। माय बहिन जैसा हारी बिमारी में सेवा करती थी। पूछ-पूछ के खिलाती थी। ऊ सरग सिधारी तो बुढ़ापा आ गया। अब ई उमर में हम केनेजांय, लेकिन तू कौन मोह में पड़ल है रे। भाग के जान बचाव नय तो ई मागूर जैसन निमक छिड़क-छिड़क के मार देगा।"

दद्दा चला गया है। फिर वहां पहले जैसा सन्नाटा छा गया है। उसकी आँखें पुनः पुलिया से चिपक गयी हैं। दद्दा की एक बात उसके दिमाग पर बाबूसाब के कोड़े की तरह बार-बार प्रहार कर रही है।

"....तू कौन मोह में पड़ल है रे।"वह सोचने लगा है। क्या यह मोह सरिता मंइयां साब के लिए तो नहीं? या फिर, पेट की रोटी और तन के कपड़े के लिए? या एक आसरा मिल जाने की निश्चिंतता के लिए? आखिर यह मोह किसके लिए है जिस कारण वह यहां बंधा रहता है। वह कुछ तय नहीं कर पा रहा है। झिंझोड़ने लगा है अपने माथे को। डूबता चला जाता है अतीत के अंधेरे में।

आठ-नौ साल का एक लड़का। गेहुंआ बदन लेकिन मैल की परत चढ़ी होने के कारण मटमैला दिखने वाला। नाक-नक्स किसी बड़े खानदान जैसे, लेकिन कर्म भिखारियों वाला। मंगलागौरी की सीढ़ियों पर नीचे से ऊपर तक एक पंक्ति में बैठे भिखारियों के झुण्ड का एक हिस्सा। नाम तक का पता नहीं। कोई पहचान नहीं। बाप का पता न माँ का। अनुमान ही लगाया जा सकता है कि पितृपक्ष मेले के रेल-पेल में एक कोंपल अपनी शाख से टूटा होगा, अंधड़ों-बरसातों से बच-बचाकर किसी तरह अपना अस्तित्व अक्षुण्ण रख पाया होगा।

बाबूसाब अपने बेटे और बहू का श्राद्ध करने दस साल पूर्व गया के पितृपक्ष मेले में आये थे। एक हवाई यात्रा में बेटा-बहू और दो पोते दुर्घटना के शिकार हो गये थे बचे रह गये थे वे और उनकी लाड़ली पोती सरिता जो अपने बाबा को छोड़कर मां-बाप के साथ नहीं गयी थी। पहाड़ी पर स्थित मंगलागौरी के मंदिर तक जाने के लिए चौड़ी घुमावदार सीढ़ियां बनी हुई हैं। उन्हीं सीढ़ियों पर कतारबद्ध बैठे भिखारियों के आगे पैसे दस पैसे फेंकते हुए बाबूसाब जब नीचे उतरे थे तब उनकी बग्घी के पीछे भुख्खड़ों का एक झुंड दौड़ पड़ा था। झुण्ड को आदत थी कार, रिक्शा, टमटम, बग्घियों के पीछे भागने की। श्राद्ध के लिए आये रईशों, सेठों, हाकिमों द्वारा परिजनों की आत्मा की शांति के लिए खैरात लुटाये जाने का भरोसा रहता था उस भीड़ को। उस भीड़ में औरतें, जवान, बच्चे, बूढ़े सभी होते थे। गिड़गिड़ाते हुए कुछ मिलने की आस में कुछ दूर तक दौड़ने के बाद भीड़ फिर सीढ़ियों के पास चली आती थी-किसी दूसरी सवारी के पीछे दौड़ने के लिए।

उस दिन बाबूसाब की बग्घी के पीछे भागता झुण्ड कुछ दूर जाकर लौट आया था लेकिन एक लड़का भागता ही आ रहा था। फटी पैंट, उघड़े बदन, पसीने से लथपथ। आंखों में कुछ पा जाने की चमक शेष थी शायद। पीछे आते लड़के को देख बाबूसाब ने बग्घी रुकवायी थी। लड़का सहमकर खड़ा हो गया था। वे डांटकर भगाने ही जा रहे थे कि सरिता बोली थी-"बाबा, इसे अपने साथ लेते चलिए।"किसन दद्दा जो लड़के की हालत पर कब से तरस खाते आ रहे थे मौका हाथ से जाने नहीं दिया था- हाँ मालिक, मंइयां साब ठीक कहती हैं। इसे लेते चलिए। मंइयां साब हवेली में बिल्कुल अकेली रहती हैं। यह रहेगा तो बिटिया का मन बहलेगा और यह छोटा-मोटा काम भी कर दिया करेगा।

फिर उसका नाम-वाम पूछा गया था। मां-बाप का ठौर-ठिकाना पूछा गया था। तब वह केवल सिर हिलाता रहा था। बाबूसाब की लम्बी मूँछों वाले रौबीले चेहरे को देखकर वह लड़का डर रहा था। बाबूसाब का आदेश पाते ही वह सिहर कर बग्घी के पांवदान के पास दुबककर बैठ गया था। उसे आज भी याद है, एक जगह बग्घी रुकी थी।तिलकुट का टोकरा बग्घी में धरवाते समय किसने दद्दा ने हँसते हुए अचानक कहा था-"मालिक, इसे हम तिलका नाम से पुकारेंगे।क्यों रे, ठीक रहेगा न?"

तभी उसे एक नाम मिला था, एक पहचान मिली थी। मां-बाप के रूप में मिले थे किसनदद्दा।बाबूसाब के रूप में आश्रयदाता मिला था और मिली थीं सरिता मंइयांसाब, साथ-साथ खेलने वाली, हँसने-हँसाने बाली एक हमसखा, एक हमदर्द।

बड़ा होने पर भले ही उनका साथ-साथ खेलना-कूदना छूट गया ?बेझिझक मिलना-मिलाना बंद हो गया। उसे जानवरों को चराने, चारा लाने, घोड़े की देखभाल करने जैसे कामों में लगा दिया गया। सरिता मंइयां साब स्कूल- कॉलेज की पढ़ाई करने लगीं। दोनों के रास्ते अलग हो गये लेकिन उनके बीच की हमदर्दी, हमसखापन, लगाव-चाह फिर भी पहले की तरह बरकरार रहा। खाने की कोई भी चीज़ सरिता मंइयां साबपहले उसे खिलातीं तब खुद खातीं। उसकी छोटी से छोटी इच्छा का भी ख्याल रखती थीं। जब भी मिलतीं बेझिझकमिलतीं। उनकी आंखों में उसके लिए स्नेह भरा होता। वह भी सरिता मंइयां साब का पूरा ख्याल रखता। उनकी मामूली ख्वाहिश को भी पूरा करने के लिए जान लड़ा देता। मंइयां साब की हर पसंद-नापसंद को वह जानता था। उसकी हर वक्त यही चेष्टा रहती कि मंइयां साब को खुश कैसे रखा जाये।उनकी पसंद की चीज उन्हें सबसे पहले देने की कोशिश में रहता।

सरिता मंइयां साब का उसके प्रति रहमदिल होना बाबूसाब को कतई पसंद नहीं था लेकिन वह कुछ नहीं कर सकते थे। सरिता मंइयां

साब को मना करना उसके वश में नहीं था अतएव सारा गुस्सा, सारी खीज उसे कोड़ों से पीटकर निकाला करते थे। सारा दिन कोल्हू के बैल की तरह उसे कामों में जोते रहना चाहते थे। वह मार खाता था, कोल्हू का बैल बना रहता था लेकिन जबान नहीं खोलता था। कहीं भागकर जाता नहीं था। सरिता मंइयां साब उसके घावों पर मरहम रखती थीं, अपने बाबा से लड़ पड़ती थीं। कई बार उसे बचाने के लिए खुद को घायल कर लेती थीं।

वह आजतक नहीं समझ पाया मंइयां साब और उसके बीच के रिश्ते को। इस रिश्ते की कौन सा नाम दे? मंइयां साब कभी मां दिखती, कभी बहन, कभी प्रेमिका तो कभी दोस्त। यह कैसी चाहत है उनके बीच। इसी चाहत के खातिर न जाने कितने कोड़े खाये हैं उसने लेकिन आज तक न उस चाहत को समझ पाया है वह, न कभी प्रकट करने की चेष्टा की है उसने। वह सरिता मंइयां साब के सामने हमेशा मूक रहा है।

वह अचानक चौंक उठा है। पास ही कहीं खटका हुआ है। एक बिल्ली ने गिलहरी पर झपट्टा मारा है। गिलहरी सरसरा कर दूसरे पेड़ पर चढ़ती चली गयी है।बाहर धूप नरम हुई है। शायद दिन ढलान पर है। उसकी आँखें पुलिया पर पूर्ववत चिपकी हैं। नहर पर रेंगता एक साया सा दिखा है। उसका दिल धड़कने लगा है। आँखें फैल गई हैं। लेकिन नहीं, यह तो बैलगाड़ी है। वह फिर सोचने लगा है।

सवेरे जैसे ही किसन दद्दा ने उसे खबर दी कि आज सरिता मंइयां साब आने वाली हैं, उसके दिमाग में बस एक ही बात आयी थी। उसे सरिता मंइयां साब के लिए जामुन लाने हैं, बड़े-बड़े पके हुए दाने। गरमी आखिरी चरण में थी। जामुन पकने का खास मौसम। वह जानता था सरिता मंइयां साब को जामुन कितने प्यारे हैं। जामुन खाने के लिए जान देती थीं बचपन में। जबरन उसे ढकेलकर पेड़ पर चढ़ा देती थीं। फिर वह एक-एक कर पके हुए जामुन तोड़कर गिराता जाता था और मंइयां साब मुंह में रखकर खाने लगती थीं। मंइयां साब को खाते हुए देखना उसे कितना अच्छा लगता था। बाबूसाब ने खास सरिता मंइयां साब के लिए उत्तम किस्म के जामुन के पेड़ लगवाये थे। उसने इसी अवसर के लिए पेड़ पर जामुन सहेज कर रखे थे। रात दिन चौकसी कीथी। एक फल भी किसी के हत्थे पड़ने नहीं दिया था। बगीचे की रखवाली करने वाले को खास हिदायत दे रखी थी। पोखर वाले बड़े बगीचे से उसे जामुन तोड़कर लाने थे। बस दस मिनट का रास्ता था। इसलिए बाबूसाब के आदेश के बावजूद कि ग्यारह बजते ही बग्घी लेकर उसे तैयार रहना है, वह बगीचे की ओर दौड़ पड़ा था। जामुन तोड़कर लाने में कितना समय लगेगा! ठीक समय पर बग्घी तैयार कर वह हाजिर हो जाएगा। अब उसे क्या पता था, रास्ते में गांव के आवारा लड़के ढोर-डांगर चराते मिल जायेंगे। उसे घेर लेंगे। चिढ़ाने लगेंगे। मंइयां साब के बारे में उल्टी-सीधी बातें करने लगेंगे।

उसे कोई सौ गालियां दे दे, चाहे जितना ही चिढ़ा ले, वह बर्दाश्त कर लेता है। लाठी भी मार दे-पलटकर वार नहीं करता। लेकिन सरिता मंइयां साब के बारे में कोई जरा भी उल्टी-सीधी बात कर दे तो वह कभी बर्दाश्त नहीं करता। मारने-पीटने पर उतर आता है। सरिता मंइयां साब के बारे में एक लड़के ने फूहड़ बात बोल दी। वह खुद को रोक नहीं सका। आपे से बाहरहो गया था। उस लड़के से उलझ पड़ा था। पठखनियां दे दी थी। तब तक बहुत समय निकल गया था। जामुन तोड़कर इकट्ठा करते-कराते उसे देर हो गई थी। समय का अंदाजा नहीं रहा था। वह दौड़ता हुआ वापस आया था। जामुन की पोटली झोपड़े में सुरक्षित रखकर जब वह हवेली के दरवाजे पर पहुंचा था तो बाबूसाब लाल-लाल आंखें किये क्रोध से कांप रहे थे। ठण्डी सिहरन उनकी हड्डियों में फैल गयी थी। बाबूसाब उसे देखते ही दहाड़ उठे थे। किसन दद्दा को कोड़ा लाने का आदेश दिया था।

फिर वह था, उसकी पीठ थी और बाबूसाब का कोड़ा था। हवा में कोड़े की सटकार की आवाज उसके चीखने-चिल्लाने की आवाज से ऊंची थी। मारते-मारते थक जाने के बाद बाबूसाब बग्घी पर बैठकर स्टेशन चल दिये थे। होश आने पर खुद को उसने झोपड़े में पड़ा पाया था।

शरीर हिल उठने पर दर्द का रेला पुन: उठ आया है। उसने दर्द पीने की चेष्टा में मुंह बनाया है कि तभी उसकी आंखों में चमक उभरी है। सारा दर्द छूमंतर सा हो गया है। पुलिया के पार बग्घी आती हुई दिखी है। उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा है। उछलकर मुँह के रास्ते बाहर निकल पड़ना चाहता है। रोम-रोम जैसे सरगम की धुन पर थिरकने-सा लगा है। आंखें खुद-ब-खुद मुंद गयी हैं। मानो देर तक खुली रहने के कारण थक गई हों और विश्राम करना चाहती हों।

धीरे-धीरे बग्घी के चक्के की चर्र-चों, घोड़ों की टाप स्पष्ट सुनाई देने लगी है। ज्यों-ज्यों आवाज नजदीक आने लगी है, उसके दिल के उछलने की गति बढ़ने लगी है। आंखें मुंदी हुई हैं लेकिन शरीर में जैसे हजार आंखें उग आयी हैं। हजार आंखों से वह देख रहा है, हजार कानों से आहट ले रहा है। हवेली के दरवाजे पर बग्घी रुकी है। सरिता मंइयां साब उतरीं हैं। किसन दद्दा आगे बढ़कर सामान उतारने लगे हैं। जमीन पर पांव देते ही सरिता मंइयां साब दद्दा सेपूछ बैठी हैं-"कहां है तिल्लू? कहीं दिखाई नहीं देता। उसकी तबीयत तो ठीक है? स्टेशन क्यों नहीं आया?"

कई सवाल एक साथ किये गये हैं। किसन दद्दा चुप हैं। बाबूसाब सरिता मंइयां साब को हवेली के भीतर ले गये हैं। "चल बिटिया, इतनी दूर से आयी है। थोड़ा आराम कर ले। थकान मिट जाएगी।"

रग्घूकक्का ने बग्घी हटा ली है। वहां पहले की तरह खामोशी छा जाती है। अंधेरे के साथ खामोशी भी गहरी होने लगी है। अनायास उसकी आंखों से आंसू की दो बूंद निकल आये हैं। वे ढुलकने को हैं। उसने हथेली से पोंछ लिया है।

कुछ देर तक वह निढाल पड़ा रहता है। कोठरी के बाहर-भीतर अंधेरा गहरा गया है। शाम रात की गोद में छिप गयी है। देर तक उससे पड़ा नहीं रहा जाता। वह बांस सेल टके जामुन की पोटली को देखने की कोशिश कर रहा है। मंइयां साब को देना होगा। कल बासी हो जायेंगे। उसने उठने की कोशिश की है। पूरे बदन में हजार सुईयां एक साथ चुभने का एहसास हुआ है। वह निश्चेष्ट पड़ गया है। कुछ देर बाद उसने दोबारा उठने की कोशिश की है। इस बार उसने दर्द पी लिया है। ।आहिस्ते से उठा है। आहट लेते हुए कोठरी के उस कोने तक आया है जहां पोटली लटक रही है। अंधेरे में टटोलकर पोटली ले ली है। उसे पता है, इस वक्त बाबूसाब मंदिर में पूजा पर बैठे होंगे। सरिता मंइयां साब किस कमरे में बैठी होंगी, उसे इसका पता भी है।

वह हवेली के दरवाजे तक आया है। अंदर सरिता मंइयां साब किसन दद्दा से कह पूछ रही हैं। मंइयां साब की मीठी आवाज को वह अपने कानों में समेट लेना चाहता है। जामुन की पोटली उसने कसकर पकड़ ली है। दिल छाती फाड़कर बाहर आना चाह रहा है। सांसों की तेज गति पर नियंत्रण किया है। वह दरवाजा खोलकर ऊपर आ गया है। अब वह उस कमरे की ओर बढ़ रहा है जिस कमरे में सरिता मंइयां साब बैठी हैं। उसे मंइयां साब की झुकी हुई पीठ दिख रहीं है। वे पैरें में चप्पल डाल रही हैं। शायद कहीं जाने की तैयारी कर रही हैं। चप्पल पहनते हुए बोलती जा रही हैं-"किसन दद्दा, आपको पहले ही बताना चाहिए था। चलिये जल्दी। पता नहीं तिल्लू की कैसी हालत होगी। बाबा भी हद करते हैं। जमाना बदल गया। जमींदारी चली गयी। लेकिन उनका तेवर नहीं बदला। वैसा ही रहन-सहन। वैसा ही रौब-दाब ।उम्र हो गयी। अब तो क्रोध पर काबू रखना चाहिए।"

आगे बढ़ता-बढ़ता वह रुका है। उसके पैर कांपने लगे हैं। शरीर का बोझ उठा पाने में असमर्थ से लगते हैं। उसकी आंखों से आंसुओं की बूंदें टप-टप चूने लगी हैं। सरिता मंइयां साब बाहर निकलने के लिए घूमी हैं। अचानक उनकी नजर नीम अंधेरे में डगमगाते तिलका पर पड़ी है। वे लपककर उसके बिल्कुल पास आ गयी हैं। अनायास हवा में जैसे लाखों गुलाबों की महक तैर उठी हो। वह सांसों में भर लेना चाहा है।

"तिल्लू, अब मिलने का होश हुआ है तुझे।"

जामुन की पोटली उसने आगे बढ़ा दी है। सरिता मंइयां साब ने झपटकर पोटली ले ली है-"क्या है क्या इसमें?"

किसन दद्दा ने जानकारी दी है-"आपके लिए जामुन होगा मंइयां साब। इसी जामुन की खातिर तो आज इस पर कोड़े पड़े हैं।"सरिता मंइयां साब पत्थर की मूर्ति बन गयी हैं। क्षण भर के लिए सकते की हालत में रहने के बाद कुछ कहने के लिए मुंह खोलने वाली हैं कि तभी बाबूसाब की दहाड़ गूंज उठी है। सबके सब कांप उठे हैं।

"यहां तक घुस आया साला।" जब तक कोई कुछ समझे, हिले-डुले कि बाबूसाब ने उछलकर एक लात जमा दी है। वह गेंद की तरह लुढ़कता हुआ दूर तक चला गया है। एक चीख उभरकर विलीन हो गयी है।

'बाबा SSS ! ' सरिता मंइयां साब पूरी शक्ति से चिल्ला उठी हैं। दौड़कर उसके पास गयी हैं। तब तक वह उठ चुका है। मंइयां साब बिफर उठी हैं- "मैं पूछती हूँ तू क्यों पिटता है तिल्लू? क्या हो गया है तेरे अभिमान को? क्यों अपने शरीर पर इतना जुल्म ढाता है? क्या खून की जगह पानी बह रहा है तेरी रगों में। क्या तेरा दिल नहीं है, पत्थर है तू? एक चींटी भी अपना बचाव करती है। अरे, तू अपना बचाव नहीं कर सकता तो रोज-रोज जलील होने से तो बच सकता है। तू दूर चला जा यहाँ से। तिल्लू यह जगह तेरे लिए नहीं है। यहां जल्लाद बसते हैं, आदमी नहीं। तू दूर चला जा तिल्लू, दूर चला जा।"

सरिता मंइयां साब की आवाज रुंध गयी है। आक्रोश पानी बनकर बहने लगा है। वे रोती हुई कमरे में चली गयी हैं। सख्त दिल बाबूसाब भी सकते में आ गये हैं। उल्टे पांव लौट गये हैं। उसकी सहायता के लिए किसन दद्दा बढ़ आया है। उसने हाथ के इशारे से मना कर दिया है।

वह खुद चलने लगा है। उसके पैरों में पहले से अधिक ताकत आ गयी है। धीरे-धीरे चलकर वह सरिता मंइयां साब के कमरे तक आया है। क्षण भर के लिए ठिठका है। उसके होंठ फड़फड़ाये हैं। उसने कुछ कहना चाहा है। फिर, सधे कदमों से आगे बढ़ गया है।

उसने हवेली की चौखट पार कर ली है। वह आगे बढ़ने लगा है। सामने अंधेरा है। अंधेरे ने उसे लील लिया है। चारों तरफ खामोशी है सिर्फ दूर होती उसके कदमों की आवाज सुनायी दे रही है।

प्रसिद्ध कथाकार एवं सेवानिवृत्त अभियंता
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

भाषा विमर्श

राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन

- दिलीप कुमार सिंह

भारत की शिक्षा को 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाने के उद्देश्य से वर्ष 2020 में बहुप्रतीक्षित नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 लागू की गयी। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में कहा गया है कि दुर्भाग्य से भारतीय भाषाओं को समुचित ध्यान और देखभाल नही मिल पायी है, जिसके तहत देश ने विगत 50 वर्षों में 220 भाषाओं को खो दिया है। युनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को'लुप्तप्राय' घोषित कर दिया है। देश में इन समृद्ध भाषाओं/संस्कृति की अभिव्यक्ति को संरक्षित या उन्हें रिकार्ड करने के लिए कोई ठोस नीति अभी तक नहीं थी। नयी शिक्षा नीति भारतीय भाषाओं के संरक्षण के लिए यह एक बहुत बड़ा कदम है। इस कार्य के लिए अनेक अकादमी व संस्थान भी खोले जाने की घोषणा की गयी है।

इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए दिनांक 01 फरवरी, 2021 को संसद में वित्त मंत्री द्वारा पेश किए गए वर्ष 2021-22 के आम बजट में कहा गया है कि **हम एक नई पहल-राष्ट्रीय अनुवाद मिशन (एनटीएलएम) शुरू करने वाले हैं। इससे शासन एवं नीति से संबंधित ज्ञान को भारत की प्रमुख भाषाओं में इंटरनेट पर**

उपलब्ध कराया जा सकेगा।

भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए यह एक बहुत उपयोगी और महत्त्वाकांक्षी कदम है। राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन के माध्यम से भारतीय भाषाओं को प्रासंगिक बनाने की दिशा में कार्य किया जाएगा। राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन सरकार के 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान की दिशा में बढ़ाया गया एक कदम है, जो कि भारत के नागरिकों को ज्ञान के क्षेत्र में सशक्त बनाते हुए 'वन इंडिया' के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होगा। इसके साथ ही इस मिशन का प्रमुखउद्देश्य भारत में भाषायी अवरोधों को खत्म करके भारत की सभी 22 अनुसूचित भाषाओं में इंटरनेट पर उपलब्ध सूचनाओं का आदान-प्रदान करके मौखिक तथा लिखित दोनों रूप में एक ज्ञान आधारित समाज (नॉलेज बेस्ड सोसाइटी) का निर्माण करना है। इस मिशन के तहत, एक डिजिटल प्लेटफार्म पर सेवा प्रदान करने वाली मशीन अनुवाद प्रणाली बनाने की भी परिकल्पना की गई है, जिसका उपयोग न्यूनतम मानवीय हस्तक्षेप के साथ एक भाषा से दूसरी भाषा में लिखित तथा मौखिक सामग्री का अनुवाद करने के लिए किया जा सके।

उद्देश्य

राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन के अन्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- सभी भारतीय भाषाओं में नवीनतम ज्ञान को विकसित करना।
- इस मिशन में बड़े पैमाने पर सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना।
- इसके लिए विभिन्न स्टार्ट-अप और केंद्र व राज्य सरकार के संस्थानों के साथ मिलकर काम करने वाले एक इकोसिस्टम का निर्माण करना।

भारत के बहुभाषी परिवेश में मात्र एक या दो भाषाओं में ही कार्य करने से पूरे देश में सूचनाओं का प्रेषण नहीं किया जा सकता है। वैसी सूचनाएं जो पूरे देश के लिए समान रूप से उपयोगी हैं, उसे देश की सभी लोकप्रिय भाषाओं में उपलब्ध कराना अति आवश्यक है। इसे समझते हुए वर्ष 2020 में, कोविड-19 के संक्रमण की चरम स्थिति के समय, भारत सरकार द्वारा रेवरी लैग्वेज टेक्नोलॉजी के साथ एक समझौता करके उनकी अनुवाद तकनीकी 'अनुवादक' के प्रयोग से संबंधित सूचनाओं का अनुवाद कर माईजीओवी कोविड-

19 पेज पर 10 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराया गया।

कोरोना महामारी के बाद भारत में टियर-2 और टियर-3 शहरों में ऑनलाइन सेवाओं का प्रयोग बहुत बढ़ा है। इसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में ग्राहक उन्मुखी व्यवसाय और सरकारी एजेंसियों ने स्थानीय भारतीय भाषाओं में सेवा प्रदान करना शुरू कर दिया है। गूगल द्वारा अपने विभिन्न उत्पादों जैसे सर्च, मैप, लेंस आदि में भाषा

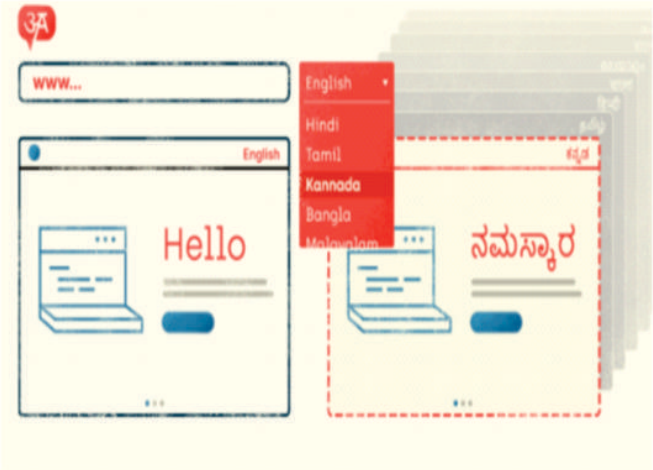

केंद्रित नयी विशिष्टताओं का प्रयोग करना शुरू कर दिया गया है। एक्सिस बैंक द्वारा ग्राहकों की समस्याओं का समाधान करने के लिए AXAA नामक बहुभाषी वायस बॉट का प्रयोग शुरू किया गया है। यह 10 भारतीय भाषाओं की 160 से अधिक बोलियों में सेवा प्रदान करती है। वर्ष 2020 में, स्थानीय भाषाओं में सेवायें प्रदान करने वाले स्टार्ट-अप में निवेश खूब बढ़ा है। वेंचर इंटेलीजेंस की एक रिपोर्ट के मुताबिक, अक्टूबर, 2020 तक भारत में स्थानीय भाषाओं में काम करने वाले स्टार्ट अप में 1600 करोड़ रुपए का निवेश बढ़ा है।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भोपाल में वर्ष 2015 में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में अपने वक्तव्य में कहा था कि "जो टेक्नोलॉजी के जानकार हैं, उनका कहना है कि आने वाले दिनों में डिजिटल वर्ल्ड में तीन भाषाओं का दबदबा रहने वाला है, अंग्रेजी, चाइनीज और हिंदी। जो भी टेक्नोलॉजी से जुड़े हुए हैं, उनका सबका दायित्व बनता है कि हम भारतीय भाषाओं को भी और हिंदी भाषा को भी टेक्नोलॉजी के लिए किस प्रकार से परिवर्तित करें। जितनी तेजी से इस क्षेत्र में काम करने वाले विशेषज्ञ हमारी स्थानीय भाषाओं से लेकर हिंदी भाषा तक नए सॉफ्टवेयर तैयार करके, नए ऐप्स तैयार करके जितनी बड़ी मात्रा में लाएंगे, उतना अपने आप में भाषा का एक बहुत बड़ा बाजार बनने वाली है। किसी ने सोचा नहीं होगा कि भाषा एक बहुत बड़ा बाजार भी बन सकती है। आज बदली हुई टेक्नोलॉजी की दुनिया में भाषा अपने आप में एक बहुत बड़ा बाजार बनने वाली है।"

इस मिशन के माध्यम से इंटरनेट पर केवल हिंदी या अंग्रेजी ही नहीं बल्कि भविष्य में सभी सरकारी सूचनाएं संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज 22 भाषाओं में उपलब्ध करायी जाएंगी। यह मिशन वर्ष 2025 तक भारत को एक ट्रिलियन डॉलर डिजिटल अर्थव्यवस्था की दिशा ले जाने में सहयोगी होगा और भारत सरकार की महत्त्वाकांक्षी परियोजना **डिजिटल भारत, आत्मनिर्भर भारत** को पूर्ण करने में सहायक होगा।

वर्षों तक भारत में कम साक्षरता दर, प्रौद्योगिकी का अभाव, कम आय और कम इंटरनेट, मोबाईल व कंप्यूटर की कम उपलब्धता से क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री उपलब्ध नही हो पा रही थी, लेकिन अब स्थिति बदल गयी हैं। राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन इस दिशा में परिवर्तनकारी सिद्ध होगा। भले ही भारत में, शासकीय कार्यों में अंग्रेजी की ही प्रधानता है लेकिन मात्र 5% भारतीय ही अंग्रेजी में ठीक-ठीक ज्ञान रखते हैं। बाकी 95% भारतीयों को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से यह सब अवसर देने होंगे और अब यह कार्य राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन के माध्यम से आसानी से हो सकेगा।

उप प्रबंधक (राजभाषा)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

नारी विमर्श

बदलते भारत में महिलाओं की भूमिका

- रिंकु दुबे

आज अगर महिलाओं की स्थिति की तुलना सैंकड़ों साल पहले की स्थितियों से की जाए तो यही दिखता है कि महिलाएं पहले से कहीं ज्यादा तेज गति से अपने सपने पूरी करने की ओर अग्रसर हैं।महिलाएं परिवार बनाती हैं, परिवार घर बनाता है, घर समाज बनाता है और समाज से देश बनता है। इसका सीधा सा अर्थ यही है कि एक महिला का योगदान हर जगह है। दिन-प्रतिदिन लड़कियां ऐसे-ऐसे कीर्तिमान बना रही है जिस पर न सिर्फ परिवार, समाज बल्कि पूरा देश गर्व महसूस कर रहा है।

शास्त्र से लेकर साहित्य तक नारी की महत्ता को स्वीकार किया गया है। इतिहास गवाह है कि भारतीय समाज ने कभी भी मातृशक्ति के महत्त्व का कम आकलन नहीं किया है और जब भी ऐसा करने की कोशिश की गई है तो समाज में कुरीतियां और कमजोरियां ही पनपी है।पंडित जवाहर लाल नेहरू के कथनानुसार–"यदि आपको विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना होगा। महिलाओं का विकास होने पर समाज का विकास स्वतः हो जाएगा।" आज के दौर में भारत की मजबूत होती आर्थिक व राजनीतिक स्थिति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पं. जवाहर लाल नेहरू जी का ये कथन अक्षरशः सत्य है। आज की नारी राजनीति कारोबार, कला तथा नौकरियों में पहुंचकर नए आयाम गढ़ रही हैं।

वैदिक एवं उत्तर काल में महिलाओं को गरिमामय स्थान प्राप्त था। उसे देवी, सहधर्मिणी, अर्धांगिनी, सहचरी माना जाता था। स्मृति काल में भी " यत्रनार्यस्तुपूज्यन्तेरमन्तेतत्र देवता" कहकर उसे सम्मानित किया गया है। पौराणिक काल में भी शक्ति का स्वरूप मानकर उसकी आराधना की जाती रही है, परन्तु 11वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के बीच भारत में महिलाओं की स्थिति दयनीय होती गई। एक तरह से यह कालावधि महिलाओं के सम्मान, विकास और सशक्तीकरण का अंधकार युग था। परन्तु उन्नीसवीं सदी के मध्य काल से लेकर इक्कीसवीं सदी तक आते-आते पुन: महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ और महिलाओं ने शैक्षिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, प्रशासनिक, खेलकूद आदि विविध क्षेत्रों में उपलब्धियों के नए आयाम स्थापित किये। आज महिलाएं आत्मनिर्भर एवं आत्मविश्वासी है औ रवे पुरुष प्रधान चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में भी अपनी योग्यता प्रदर्शित कर रही है।

आज के बदलते दौर में नारी जीवन के हर क्षेत्र में कदम बढ़ा रही है। एक वक्त था जब महिलाओं को सिर्फ घर की साज-सज्जा का समान समझा जाता था, परन्तु उत्तरोत्तर अपने निरंतर प्रयासों से महिलाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में न सिर्फ खुद को स्थापित किया है, बल्कि अपने वजूद का लोहा मनवाने पर विवश कर दिया है। उसने सिद्ध कर दिया है कि वह शिव भी है और शक्ति भी, तभी तो भारतीय संस्कृति में सनातन काल से ही अर्धनारीश्वर की कल्पना सटीक बैठती है। आज की नारी अपने कर्तव्यों को गृहकार्यों की इतिश्री नहीं समझती है, अपितु वह अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति भी सजग है। वह अब स्वयं के प्रति सचेत होते हुए अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाने का माद्दा रखती है। कोई सिर्फ यह कह कर उसके आत्मविश्वास को तनिक भी हिला नहीं सकता कि वह एक 'नारी' है। शिक्षा के बढ़ते प्रभाव ने नारी के कार्य क्षेत्र की सीमा को घर की चारदीवारी से बाहर निकाल कर दुनिया तक फैला दिया। शिक्षा की बदौलत आज महिलाएं अपने कैरियर के प्रति संजीदा हैं, जिसके कारण देश की आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महिलाएं हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं। चाहे वह राजनीति, प्रशासन, खेलकूद, उद्योग व्यवसाय हो अथवा मीडिया, चिकित्सा विज्ञान प्रौद्योगिकी लगभग हर क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है। नारी की नाजुक शारीरिक संरचना के कारण यह माना जाता रहा है कि वे सुरक्षा जैसे कार्यों का निर्वहन नहीं कर सकतीं, पर बदलते वक्त के साथ यह मिथक भी टूटा है। महिलाएं आज पुलिस, सेना और अर्धसैनिक बलों में बेहतरीन तैनाती पा रही हैं। रूढ़ियों को धता बताकर महिलाएं जमीन से लेकर अंतरिक्ष तक हर क्षेत्र में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। यही नहीं परंपरागत रूढ़ियों को तोड़ते हुए श्मशान में जाकर अपने सगे-संबंधियों की अंत्येष्टि पर मुखाग्नि देने से लेकर महिलाएं वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पुरोहिती का कार्य करती हैं और विवाह के साथ-साथ शांति यज्ञ, गृह-प्रवेश, मुंडन, नामकरण और यज्ञोपवीत भी करा रही है। शर्मायी, सकुचाई सी खड़ी महिला अब रूढ़िवादिता के बंधनों को तोड़कर अपने अस्तित्व का आभास करना चाहती हैं। आज नारी स्वयं को सामाजिक पटल पर दृढ़ता से स्थापित करने को व्याकुल है। वर्तमान समय में वह अपनी संपूर्णता को पाने की राह पर निरंतर अग्रसर है ताकि समाज के नारी विषयक अधूरे ज्ञान को अपने आत्मविश्वास की लौ से प्रकाशित कर सके।

नारी की जागरूकता ने नारी को अपनी अभिव्यक्तियों के विस्तार का सुनहरा मौका भी दिया है। हमारे देश के प्रधानमंत्री जी ने देश की आधी आबादी की महत्ता को स्वीकार करते हुए उन्हें देश की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए बढ़-चढ़ कर भागीदारी करने का आह्वान किया है। आज सरकारें तथा सामाजिक विचारधारा इस बात से अवगत हो चुकी हैं कि "सबका साथ सबका विकास" आधी

आबादी यानी महिलाओं के सहयोग के बिना संभव नहीं हो सकता। इसीलिए महिलाओं को रोजगार के लगभग हर क्षेत्र में आरक्षण देकर उन्हें आगे बढ़ाया जा रहा है। पंचायतों में मिले आरक्षण का उपयोग करते हुए नारी जहां नए आयाम रच रही हैं वहीं विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है। महिलाओं ने देश के राष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष,विपक्ष की नेता,सर्वाधिक शक्तिशाली अमेरिका जैसे देश में भारत की राजदूत से लेकर विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री के पदों पर अपनी उपस्थित दर्ज करायी है। यह नारी सशक्तीकरण का ही उदाहरण है।

नारी आज स्वयं को सामाजिक पटल पर दृढ़ता से स्थापित कर रही हैं। दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, बाल-विवाह, शराबखोरी, लिंग भेद जैसी तमाम बुराइयों के विरूद्ध महिलाएं आगे आ रही हैं और दहेज लोभियों को बैरंग लौटाने तथा शराब के ठेकों को बंद कराने जैसे कदमों को प्रोत्साहित कर रही हैं।

साहित्य के माध्यम से भी महिलाओं ने जहां पुराने समय से चली आ रही कुप्रथाओं पर चोट की है वहीं समाज को नए विचार भी दिए हैं। छायावाद से लेकर अब तक भारतीय महिला साहित्यकारों की एक लंबी सूची है, जिन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं को ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, अमृता प्रीतम (साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता (1956) प्रथम महिला साहित्यकार), आशापूर्ण देवी, इस्मत चुगतई, महाश्वेता देवी, मन्नु भंडारी, मृणाल पाण्डेय, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, डॉ. कृष्णाअग्निहोत्री, मेहरुन्निसा परवेज, पद्मासचदेव, अनामिका, अरुंधती राय, महुआ मांझी इत्यादि मशहूर लेखिकाओं ने साहित्य की विभिन्न विधाओं को ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उनका साहित्य आधुनिक जीवन की जटिल मानवीय संबंधों तथा समय के साथ परिवर्तित होते सामाजिक संबंधों का जीता-जागता दस्तावेज है। भारतीय समाज की संस्कृति और दार्शनिक बुनियादों को समकालीन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करते हुए उन्होंने अपनी वैविध्यपूर्ण रचनाशीलता का एक ऐसा आकर्षक, भव्य और गंभीर संसार निर्मित किया है जिसका चमत्कार सारा साहित्यिक जगत महसूस करता है।

कभी रोती-बिलखती और परिस्थितियों से हर पल समझौता कर

अपना 'स्व' मिटाने पर मजबूर नारी वर्तमान में न सिर्फ अपना 'स्व' तलाश रही है बल्कि उसे ऊंचाइयों पर ले जाकर नए आयाम भी दे रही है। वर्तमान दौर में महिला सशक्तीकरण से एक नए युग का निर्माण हो रहा है। महिला सशक्तीकरण एक जरूरत ही नहीं बल्कि विकास और प्रगति का अनिवार्य तत्व बन गया है। आज के दौर में लगभग सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने अपना दम-खम दिखाया है और देश को एक नई पहचान दिलाने में अपनी अहम भूमिका भी निभा रहीं हैं। सदियों से समाज ने महिलाओं को पूज्या बनाकर उनकी देह को आभूषणों से लादकर एवं आदर्शों की घुट्टी पिलाकर उसके दिमाग को कुंद करने का कार्य कियापर महिलाएं आज की कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, पी टी ऊषा, किरण बेदी, कंचन चौधरी, इंदिरा नूई, शिखा शर्मा, चंदा कोचर, नीता अंबानी,ऐश्वर्या राय, सुष्मिता सेन, फ्लाइंग ऑफिसर सुषमा मुखोपाध्याय, कैप्टन दुर्गा बनर्जी, सानिया मिर्जा, कृष्णा पुनिया, सुषमा स्वराज, वसुंधरा राजे सिंधिया, इरोम शर्मिला, मेधा पाटेकर, वंदना शिवा,अरुणा राय जैसी शक्ति बनकर समाज को नई राह दिखा रही है और वैश्विक स्तर पर देश का नाम रोशन कर रही है।

महिलाओं की शिक्षा-दीक्षा और व्यक्तित्व का विकास के क्षितिज दिनों-दिन खुलते जा रहे हैं। एक तरफ लड़कियां हाईस्कूल व इंटर की परीक्षाओं में बाजी मार रही हैं, वहीं तमाम प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ देश की सर्वाधिक प्रतिष्ठित सिविल सेवाओं में भी उनका नाम हर साल बखूबी जगमगा रहा है। खेलों में भी जैसे बेडमिंटन, टेनिस, क्रिकेट,हॉकी आदि विभिन्न खेलों में भी महिलाएं उत्कृष्ट प्रदर्शन कर हमें गौरवान्वित करते हुए भारत के नव निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

अंततः सच तो यह है कि आज देश विकास और उन्नति के नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। यह तभी संभव हो पा रहा है जब महिलाएं पुरुषों संग कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। कहना गलत न होगा कि समय के साथ महिलाओं ने अपनी शानदार छवि का निर्माण किया है। यह सत्य है कि वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति में काफी बदलाव आयाहै, लेकिन फिर भी वह अनेक स्थानों पर पुरुष प्रधान मानसिकता से पीड़ित हो रही है। इस संदर्भ में राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानन्द का यह कथन उल्लेखनीय है-"किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहां की महिलाओं की स्थिति।" देश तथा समाज का चहुँमुखी विकास तभी संभव है, जब पुरुषों के साथ-साथ महिलाएं भी अग्रसर हों। गर्व की बात है कि बदलते भारत के परिदृश्य में भारतीय महिलाओं ने स्वामी विवेकानन्द जी के इस कथन को पूरी तरह चरितार्थ कर दिया है।

राजभाषा विभाग
बीसीसीएल,कोयला भवन

आपका गुल्लक

सेवानिवृत्ति के पैसों का सुरक्षित निवेश

- श्री अनिरुद्ध नोनिया

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में 'अनुवादक' के पद पर कार्यरत श्री अनिरुद्ध नोनिया, निवेश एवं निवेश संबंधी उत्पादों में गहरी रुचि रखते हैं। इनका मानना है कि एक खुशहाल जीवन के लिए आय के साथ-साथ सुनियोजित तरीके से सही एवं नियमित निवेश करते रहना भी अत्यंत आवश्यक है और इसके लिए हमें खुद को शिक्षित करते रहना चाहिए। इस विषय पर इनके कई लेख पूर्व में भी प्रकाशित हो चुके हैं। इसी कड़ी में प्रस्तुत है उनका एक और उपयोगी आलेख।

दोस्तो,प्रायः हम अपनी सेवानिवृत्ति के नजदीक आते ही इस बात को लेकर चिंतित होजातेहैं कि सेवानिवृत्ति के बाद मिलने वाले पैसों को हम कहां निवेश करें, जिससे जीवन भर की हमारी यह पूंजी सुरक्षित भी रहे और उसपर एक संतोषजनक ब्याज भी मिलता रहे। ऐसे में हमारे पास एक ठोस सेवानिवृत्ति-योजना का होना बहुत जरूरी है,अन्यथा हो सकता है कि हम किसी के बहकावे में आकर अपनी इस गाढ़ी कमाई को हमेशा के लिए गवां बैठें। इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि इस दौरान हमारा सामना कुछ ऐसे स्वार्थी लोगों से हो जो हमें यह बताएं कि आप अपने पैसों को फलां स्कीम में निवेश कर दीजिए और आपका पैसा कुछ ही महीनों में दोगुना या तीनगुना हो जाएगा। ऐसे लोगों का मकसद हमारे पैसों को गलत जगह निवेश करवाकर उसपर एक मोटा कमीशन कमाना मात्र होता है और उन्हें हमारी पूंजी की सुरक्षा से बहुत वास्ता नहीं होता।

इसके अतिरिक्त, हो सकता है कुछ लोग वास्तव में हमारा भला चाहते हों और वे दिल से चाहते हों कि हमारे सेवानिवृत्ति का पैसे सुरक्षित एवं सही जगह निवेशित हों। इनमें हमारे कुछ पारिवारिक मित्र और हमारे अपने बच्चेभी हो सकते हैं। किंतु यह भी संभव है कि इनको सेवानिवृत्त कर्मचारियों के पैसों को सुरक्षित निवेश करने की सही जानकारी न हो। ऐसे में गलत निवेश की संभावना बढ़ जाती है,क्योंकि एक युवा और एक वरिष्ठ नागरिक अथवा सेवानिवृत्त कर्मचारी के निवेश के लिए एक जैसा पोर्टफोलियो नहीं बनाया जा सकता है। इसलिए हमें अपने पैसों एवं निवेश को लेकर जागरूक रहना चाहिए।

भारत सरकार द्वारा सामाजिक सुरक्षा बचत योजनाओं के तहत संचालित होने वाली कुछ प्रमुख योजनाएं हैं जिनमें हम अपने सेवानिवृत्ति के पैसों का निवेश करके एक चिंतामुक्त जीवन व्यतीत कर सकते हैं और उस पर प्रत्येक महीने एक बेहतरीन रिटर्न प्राप्त कर सकते हैं।

इन योजनाओं में, **वरिष्ठ नागरिक बचत योजना (एससीएसएस), प्रधानमंत्री वय वंदना योजना, पीपीएफ** और **सरकारी डेट फंड** आदि प्रमुख हैं, जिनका चयन इस उद्देश्य के लिए किया जा सकता है। ये योजनाएं विभिन्न लघु बचत योजनाओं के बीच उच्चतम ब्याज दर प्रदान करती हैं।

आइए, अब हम बारी-बारी से इन योजनाओं की मुख्य विशेषताओं पर विचार करते हैं:

वरिष्ठ नागरिक बचत योजना (एससीएसएस): यह बचत योजना विशेषकर वरिष्ठ नागरिकों अथवा सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए बनाई गई है। इसमें हम प्रमुख सार्वजनिक/निजी क्षेत्र के बैंकों तथा भारतीय डाकघर/पोस्ट ऑफिस के माध्यम से निवेश कर सकते हैं। सरकार समर्थित बचत योजना होने के नाते सभी जगह इसके नियम एवं शर्तें एक समान होती हैं। एक व्यक्ति अपने नाम से अधिकतम 15 लाख रुपये तक की राशि निवेश कर सकता है और वह चाहे तो इतनी ही राशि अपने जीवनसाथी के नाम से भी निवेश कर सकता है। यह निवेश आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 80C के तहत भी आती है। वर्तमान में इसपर 7.4% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज मिल रहा है।

प्रधानमंत्री वय वंदना योजना (पीएमवाईवाई): यह योजना विशुद्ध रूप से एक पेंशन योजना है। इस योजना में 60 वर्ष या इससे अधिक आयु का कोई भी भारतीय नागरिक निवेश कर सकता है। भारत सरकार इस योजना को भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) के माध्यम से आम जनता को उपलब्ध करा रही है। इस योजना का उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों को नियमित रूप से एक निश्चित पेंशन उपलब्ध कराना है, ताकि वे किसी पर आर्थिक रूप से निर्भर रहे बिना एक चिंतामुक्त जीवन व्यतीत कर सकें। इस योजना में भी एक व्यक्ति अपने नाम से अधिकतम 15 लाख रुपये तक की राशि निवेश कर सकता है और हम चाहे तो इतनी ही राशि अपने जीवनसाथी के नाम से भी निवेश कर सकते हैं। वर्तमान में इस पर 8% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज मिल रहा है।

पब्लिक प्रोविडेंड फंड (पीपीएफ):इस बचत योजना में कोई भी भारतीय नागरिक निवेश कर सकता है। इसमें हम प्रमुख सार्वजनिक/निजी क्षेत्र के बैंकों तथा भारतीय डाकघर/पोस्ट ऑफिस के माध्यम से निवेश कर सकते हैं। सरकार समर्थित बचत योजना होने के नाते सभी जगह इसके नियम एवं शर्तें एक समान हैं। एक व्यक्ति अपने नाम से अपने जीवनकाल में एक समय में केवल एक ही पीपीएफ खाते का संचालन कर सकता है। इसकी परिपक्वता अवधि 15 वर्ष होती है। इसमें एक वर्ष में अधिकतम 1.5 लाख रुपये तक की राशि का निवेश किया जा सकता है और हम चाहे तो अपने जीवनसाथी के नाम से भी एक पीपीएफ खाता खुलवाकर प्रतिवर्ष इतनी ही राशि निवेश कर सकते हैं। यह निवेश भी आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 80C के तहत आता है। वर्तमान में इस पर 7.10% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज मिल रहा है।

इसके अतिरिक्त, **बैंक सावधि जमा (एफडी), सॉवेनियर गोल्ड बॉन्ड, भारत बॉन्ड ईटीएफ** और कुछ ऐसी सरकारी डेट स्कीम भी उपलब्ध हैं जो पूरी तरह से सुरक्षित हैं।

आइए, हम एक ऐसे सेवानिवृत्त व्यक्ति के निवेश पर विचार करते हैं जिसे अपनी सेवानिवृत्ति के बाद लगभग ₹ 80,000,00/- (अस्सी लाख) रुपये मिले हैं।

<table>
<tr><th></th><th>वरिष्ठ नागरिक बचत योजना (एससीएसएस)</th><th>प्रधानमंत्री वय वंदना योजना (पीएमवाईवाई)</th><th>पब्लिक प्रोविडेंड फंड (पीपीएफ)</th><th>बैंक सावधि जमा (एफडी), सॉवेनियर गोल्ड बॉन्ड एवं भारत बॉन्ड ईटीएफ</th></tr>
<tr><td>स्वयं</td><td>₹15 लाख</td><td>₹15 लाख</td><td>₹1.5लाख (प्रतिवर्ष)</td><td rowspan="3">₹ 17 लाख</td></tr>
<tr><td>जीवनसाथी</td><td>₹15 लाख</td><td>₹15 लाख</td><td>₹1.5लाख (प्रतिवर्ष)</td></tr>
<tr><td>निवेश</td><td>₹30 लाख</td><td>₹30 लाख</td><td>₹3 लाख (प्रतिवर्ष)</td></tr>
<tr><td>कुल निवेश</td><td colspan="2">₹ 60 लाख (₹ 30 लाख + ₹ 30 लाख)</td><td colspan="2">* ₹२० लाख (₹ 3 लाख+ ₹ 17 लाख)</td></tr>
<tr><td>मासिक आय</td><td>₹ 18500</td><td>₹ 20000*</td><td colspan="2" rowspan="2">बैंक सावधि जमा (एफडी), सॉवेनियर गोल्ड बॉन्ड एवं भारत बॉन्ड ईटीएफ आदि (अपनी सुविधानुसार निवेश विकल्प का चयन करें) में निवेश किये गए ₹ 17 लाख रुपये में से प्रतिवर्ष ₹3 लाख निकाल कर पीपीएफ खाते में निवेश कर सकते हैं और उसपर अधिक ब्याज दर का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।</td></tr>
<tr><td>कुल मासिक आय</td><td colspan="2">**₹38500 (₹18500 +₹20000)**</td></tr>
</table>

अतःइस पोर्टफोलियो में हम देख सकते हैं कि इस कर्मचारी की सेवानिवृत्ति की पूरी राशि को कैसे कुशलतापूर्वक सरकारी योजनाओं में निवेश किया जा सकता है, जो पूरी तरह से सुरक्षित भी हैं। इस तरह से हम बिना कोई जोखिम लिए सेवानिवृत्ति के बाद एक चिंतामुक्त जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

अनुवादक, राजभाषा विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

कृपया ध्यान दें- *इस लेख का उद्देश्य आपको बचत एवं निवेश के प्रति मात्र शिक्षित करना है। अतः किसी भी सलाह को मानने और निवेश से पहले जोखिम घटकों का अध्ययन अवश्य कर लें।*

आध्यात्मिक चिंतन

मानव जीवन में आध्यात्मिकता

- बिकेश कुमार सिंह

मानव जीवन का एकमात्र लक्ष्य है ईश्वर की प्राप्ति, और यह भी यथार्थ सत्य है कि हम जाने-अनजाने उसी लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। वर्तमान मानव समाज वैज्ञानिक तौर पर काफी उन्नति कर चुका है और निरंतर बहुत सारे वैज्ञानिक प्रयोग किए जा रहे हैं। लेकिन इसके साथ-साथ आधुनिक मानव शांति की तलाश में भी है,जो उसे नहीं मिल पा रही है। सच्चाई ये है कि हम आधुनिक संसाधनों में इतने व्यस्त हो गए कि हम संसाधनों को ही शांति समझने की भूल कर रहे हैं। परिणाम स्वरूप हमें शांति के बदले अशांति ही ज्यादा मिल रही है।

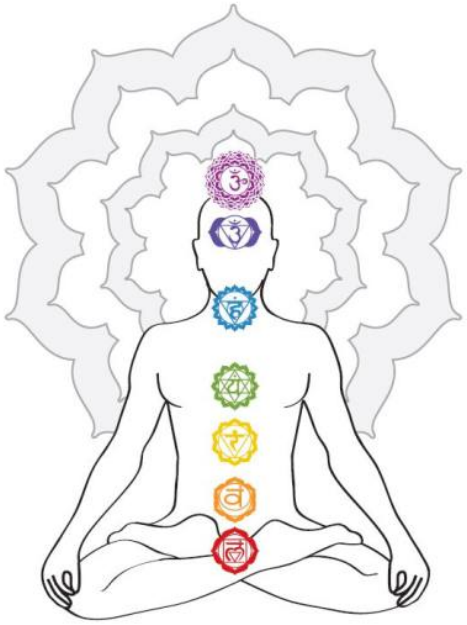

दरअसल, हमारा आत्म-स्वभाव शांति और आनंद ही तो है जो हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति भी है और हम उसे ही खोजेंगे। किन्हीं महान विद्वान का कहना है, "मन की शांति दुनिया में सबसे बड़ी सफलता है।" लेकिन इस भोगवादी दुनिया में जहां भोग अभी चरम पर है,मन की शांति हमें मिलेगी कैसे? स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं कि हम दूसरों से जितना प्रेम करेंगे, सेवा करेंगे उतना ही ज्यादा हमारा आत्मिक विकास होगा। स्वामी जी ने तो यहां तक कह दिया है कि दूसरों के बारे में रत्तीभरअच्छी बातें सोचने से ही तुम्हारी सुषुप्त शक्तियां जागृत हो जाएंगी।सोचो! यदि तुम दूसरों के लिए अच्छा करोगे तो तुम कितने आनंद में रहोगे? इससे भी आगे स्वामी जी कहते हैं कि ईश्वर को तुम कहां ढूंढते फिर रहे हो, ये गरीब, दुखी, पददलित, अज्ञानी, मेहतर आदि जीवंत ईश्वर हैं। पहले निस्वार्थ भाव से इनकी सेवा करो। इनकी सेवा करते हुए अपने आप को धन्य समझो की तुम्हें इस मानव जीवन में यह सेवा करने का महान अवसर प्राप्त हुआ है, और इनकी सेवा कर के अपने मनुष्य जन्म को कृतार्थ करो।

हम जितना ही अपने कार्यों में सेवा का विस्तार करेंगे हमारा आत्मिक विकास भी साथ-साथ बढ़ता जाएगा। लेकिन इसके साथ एक शर्त यह भी है कि हमारे अंदर अहंकार और स्वार्थ की गंध मात्र भी नहीं आनी चाहिए। हमारे मन में ये कल्पना भी नहीं आनी चाहिए कि मैं ये सारे कार्य कर रहा हूँ। अहंकार ही सारे अनर्थों की जड़ है। कर्ता भाव को नष्ट करना होगा और अकर्ता भाव को अपनाना होगा, मानना होगा कि हे ईश्वर मैं तो एक यंत्र हूँ आप जैसा कराते हो मैं वैसा ही करता हूँ। मानव ईश्वर की सबसे बड़ी रचना है इसलिए मानव सेवा सर्वोत्तम कर्म है। हम जितना ही ज्यादा सेवा मार्ग में बढ़ेंगे, उतना ही ज्यादा शांति हमारे जीवन में आती जाएगी। इसके साथ ही हम अपने दैनिक जीवन में आनंद तथा शांति की अनुभूति करने लगेंगे, जो कि हमारा निज-स्वरूप है अर्थात हम अपने स्वरूप में उतरने लगेंगे। स्वामी विवेकानन्द जी इसे 'व्यवहारिक वेदांत' कहते थे।

शांति के राज्य में पहुंचने के मार्ग है त्याग, सेवा, प्रेम और निस्वार्थता है। हम अपने अंदर जैसे-जैसे इन गुणों को अपनाकर आगे बढ़ने लगेंगे हमारा शांति का मार्ग आगे-आगे प्रशस्त होता जाएगा। इसी माध्यम से हम अपने मानव जीवन के सर्वोत्तम लक्ष्य अर्थात ईश्वर को प्राप्त कर आध्यात्मिक शांति के राज्य में पहुंच जाएंगे। स्वामी जी कहते हैं कि "They who alone live who live for others" अर्थात जीवन वही जीते हैं जो दूसरों के लिए जीते हैं। दूसरों के लिए जो भी कार्य हम निस्वार्थ भाव से करते हैं वह कतई उपासना से कम नहीं है, बल्कि सर्वोत्तम उपासना है।

'शिव ज्ञान से जीव सेवा' हर मनुष्य में ईश्वर है और मनुष्य की सेवा ईश्वर की सेवा है। यही पूजा है। आइए! आज से ही हमलोग संकल्प लें कि त्याग, प्रेम, सेवा और निस्वार्थता के बल पर अपने मानव जीवन को सार्थक करेंगे। सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी ईश्वर से हमारा मार्ग प्रशस्त करें और हमारे जीवन को आध्यात्मिक बनाएं।

सी. ए. डब्ल्यू, बीसीसीएल मुख्यालय
कोयला भवन, कोयला नगर धनबाद

काव्यकुंज

कोयले की आत्मकथा

-सुमन कुमार

सदियों तक मैं पड़ा रहा
धरती के आंचल के नीचे,
मानव ने मुझको याद किया
जब उसके सांस हुए ऊँचे।

फिर होने लगी तलाश मेरी
जंगल-जंगल पर्वत-पर्वत
जैसे माँ सीता को खोजे
नर, किन्नर, भालू और मरकट।

मुझको धरती पर लाने को
नित होने लगे उपाय नये
नवयंत्रों से सज्जित सेना
आई मेरे पीछे-पीछे।

डोजर ने मुझको सहलाया
ड्रिल ने मुझको अलसित पाया
बारूद ने जब हुंकार भरी
तब जाकर मेरी नींद खुली।

शॉवेल के मंद थपेड़ों ने
डंपर की मदमाती चालों ने
मुझको पिट-हेड तक पहुंचाया
दुनिया का दर्शन करवाया।

ले करके अल्प विराम चला
मैं आगे धोबन-शाला में
मेरे स्वागत के लिए खड़े हुए
नये-नये संयंत्र वहाँ ।
जाली पर मैं उछला कूदा
फीते पर चढ़ ली अंगड़ाई
जिग में जाकर अठखेली की
तब मैंने नव सूरत पाई।

मेरी कुछभाई चले गए
लोगों की क्षुधा मिटाने को
कुछ भाई चले अंधेरे में
महलों में दीप जलाने को
मैं भी फिर आगे बढ़ा चला
जलती फौलादें पिघलाने को ।

हे मानव तुम हमसे मापो
अपने जीवन की गहराई
जिसने अपना सब लुटा दिया
फिर जग में उजियाली फैलाई।

परियोजना पदाधिकारी
मधुबन कोल वाशरी

आनंद ही कुछ और है

-राजपाल यादव

वतन परस्ती का जज्बा जगाने का
राष्ट्र निर्माण में भागीदारी निभाने काजवानों का
हौसला बढ़ाने का दुश्मन के छक्के छुड़ाने का
और देश पर जान लुटाने का आनंद ही कुछ और है।

'स्वच्छता ही सेवा है' मुहिम चलाने का
पर्यावरण प्रदूषण भगाने का
प्लास्टिक हटाने में हाथ बंटाने का
घर-घर जागरूकता फैलाने का
और सत्य अहिंसा का मार्ग अपनाने का
आनंद ही कुछ और है।

राजभाषा का मान बढ़ाने का
मातृभाषा में गौरव गान गाने का
क्षेत्रीय भाषाओं को अपनाने का
विदेशों में हिंदी के यशगान सुनाने का
और उसे सम्मानजनक दर्जा दिलाने का
आनंद ही कुछ और है।

देश को तरक्की की राह पर ले जाने का
चांद पर उतारने का जज्बा दिखाने का
भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने का
महाशक्ति बनने की ओर कदम बढ़ाने का
और कश्मीर से धारा 370 हटाने का
आनंद ही कुछ और है।

पूर्व महाप्रबंधक (कार्मिक)/ राजभाषा
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

बैसाखियाँ

- सीताराम गुप्ता

अच्छा है
न चलने से
चलना
बैसाखियों के सहारे ही सही

पर कुछ लोग
होते हुए
दो मजबूत टाँगें भी
विवश ही नहीं
अभिशप्त होते हैं
लेने को सहारा
बैसाखियों का

टाँगें और बदन
नहीं, मन
होता है कमज़ोर उनका
आकर्षित करती हैं उन्हें
बैसाखियाँ
किसी की रजत पादुकाओं के
प्रहार की आकांक्षा की बैसाखियाँ
किसी के बंगले
किसी की गाड़ियाँ
किसी की
पद-प्रतिष्ठा, दौलत-शोहरत
किसी दिन काम आ जाने की
संभावना की बैसाखियाँ
बैसाखियाँ दूसरों के द्वारा फेंके गए
कुछ टुकड़ों के लालच की
बैसाखियाँ सब्ज़बाग़ और
आश्वासनों की
और कुछ नहीं हैं ये बैसाखियाँ

ये बैसाखियाँ हैं
स्वयं की अज्ञानता की
अकर्मण्यता और कठपुतलीपन की
व्यक्तित्वहीनता की अपनी
बैसाखियाँ
चाहे स्वर्ण निर्मित हों
अथवा हों रजताभ
बैसाखियाँ बैसाखियाँ होती हैं

बैसाखियाँ
बना देती हैं
एक पूर्ण पुरुष को अपूर्ण
विकलांग
लंगड़ा ही नहीं
गूँगा, बहरा और अंधा भी
और उसके बाद
विवेकशून्य और संज्ञाहीन भी

लेकिन यदि कोई विकलांग
मन से हो मज़बूत
हो विवेकवान
तो उसके लिए
कोई मुश्किल नहीं
उतार फेंकना बैसाखियाँ
और साथ ही सरपट दौड़ना
लेकिन जिसे हो जाता है मोह
बैसाखियों से
जिसे नहीं पता कि
किसी भी ख़ूबसूरत बैसाखी से
अच्छी होती हैं
अपनी कमज़ोर,
पोलियोग्रस्त टेढ़ी-मेढ़ी टाँगें भी
निश्चित है उसका एक दिन
हो जाना विकलांग

आओ मित्र
छोड़ कर मोह
दूसरों की
इन सम्मोहक घातक बैसाखियों
का
बनाकर मन को मज़बूत
उतार फेंके सबसे पहले
बैसाखियाँ अपनी व्यक्तित्वहीनता
की
अपने आत्म-विश्वास के अभाव की
बैसाखिया

ए डी-106-सी, पीतम पुरा,
दिल्ली-110034

राजभाषा कार्यान्वयन

बीसीसीएल में राजभाषा पखवाड़ा-2020 का आयोजन

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी राजभाषा पखवाड़ा-2020 का आयोजन बहुत हर्ष और उल्लास के साथ किया गया। यह आयोजन बीसीसीएल के सभी क्षेत्रों और मुख्यालय में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2020 के दौरान किया गया। कार्यालय में हिंदी में कार्य करने के लिए जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से इस अभियान में विविध गतिविधियाँ आयोजित की गयीं। वैश्विक महामारी कोविड-19 को दृष्टिगत रखते हुए इस वर्ष सभी आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किए गए।

राजभाषा पखवाड़ा – 2020 का शुभारंभ दिनांक 01 सितंबर, 2020 को ऑनलाइन माध्यम से अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक और निदेशक (कार्मिक) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर एक वीडियो का निर्माण किया गया, जिसके माध्यम से अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक और निदेशक (कार्मिक) द्वारा सभी कर्मियों को राजभाषा पखवाड़ा की शुभकामनाएँ दी गयीं और कार्यालय में संपूर्ण कार्य हिन्दी में ही करने और राजभाषा प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेने की अपील की गयी।

राजभाषा पखवाड़ा-2020 के दौरान दिनांक 03 सितंबर, 2020 को ऑनलाइन हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में बीसीसीएल मुख्यालय के लगभग 80 प्रतिभागियों द्वारा भागीदारी की गयी। दिनांक 07 सितंबर, 2020 को ऑनलाइन हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में लगभग 60 प्रतिभागियों द्वारा भागीदारी की गयी। ये दोनों ही प्रतियोगिताएं राजभाषा विभाग द्वारा विकसित पोर्टल myhindischool.com पर आयोजित की गयीं।

दिनांक 09 सितंबर, 2020 को कॉरपोरेट स्तरीय ऑनलाइन हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन गूगल मीट के माध्यम से किया गया। इस प्रतियोगिता में सभी क्षेत्रों और मुख्यालय के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा काव्य पाठ किया गया|

गूगल मीट के माध्यम से कविता प्रतियोगिता का आयोजन

इस प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में श्री राजपाल यादव, पूर्व महाप्रबंधक (कार्मिक एवं राजभाषा), बीसीसीएल, डॉ. के. एस. सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक (विधि) और श्री उदयवीर सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) थे। प्रतियोगिता में लगभग 30 प्रतिभागियों द्वारा काव्य प्रस्तुति दी गयी| प्रतियोगिता के अंत में श्री राजपाल यादव और डॉ. के. एस. सिन्हा द्वारा समीक्षात्मक वक्तव्य दिया गया।

दिनांक 14 सितंबर, 2020 को तल-3 सभागार कोयला भवन में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री राकेश कुमार, निदेशक (तकनीकी/संचालन) द्वारा की गयी। उन्होंने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि हिंदी बहुत ही सरल व रोचक भाषा है तथा इसका साहित्य बहुत ही संपन्न है। हिंदी के

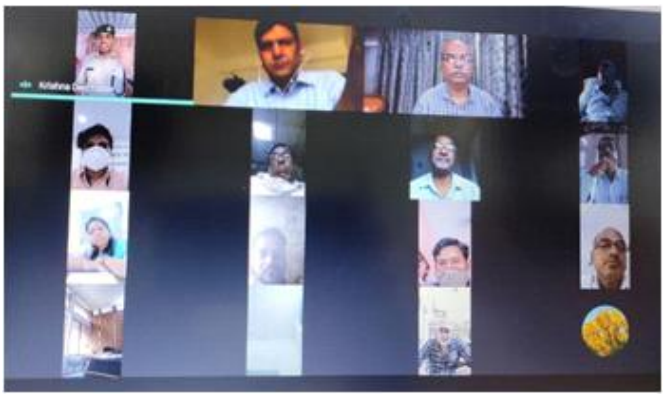

विशाल और समृद्ध साहित्य ने इसकी लोकप्रियता को बहुत बढ़ाया है। भारत में हिंदी मोती के माले के उस धागे की तरह है जो सभी भाषा रूपी मोतियों को जोड़कर रखता है। उन्होने इस अवसर पर प्रकाशित की जाने वाली कार्यालय सहायिका की सराहना करते हुए कहा कि यह बहुत उपयोगी पुस्तिका है।

इस अवसर पर निदेशक (तकनीकी/परियोजना व योजना) श्री चंचल गोस्वामी ने कहा कि इस वर्ष सभी प्रतियोगिताओं का ऑनलाइन आयोजन किया गया। इस महामारी के दौर में यह बहुत आवश्यक है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को इस अवसर पर बधाई देते हुए कहा कि आप हर दिन हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करें।

श्री पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव, निदेशक (कार्मिक) ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने का आह्वान करते हुए कहा कि हम वर्ष भर हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने का प्रयास करें। राजभाषा संबंधी लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हमें निष्ठा, प्रतिबद्धता और अभ्यास को अपने कार्य का अहम हिस्सा बनाना होगा। उन्होने इस अवसर पर कंपनी में राजभाषा के प्रति और अधिक सकारात्मक और उत्साहवर्धक माहौल बनाने के लिए कई सुझाव दिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ कोल इंडिया कॉरपोरेट गीत के साथ हुआ। इसके पश्चात हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। निदेशक मंडल का स्वागत हिंदी पुस्तक प्रदान कर किया गया।

इस अवसर पर कंपनी की गृह पत्रिका 'कोयला भारती' के अंक-33 का विमोचन किया गया। पहली बार इस पत्रिका को डिजिटल और मुद्रित दोनों ही रूपों में प्रकाशित कराया गया। इसके पश्चात राजभाषा विभाग द्वारा तैयार की गयी पुस्तिका 'कार्यालय सहायिका' का विमोचन भी निदेशक मंडल द्वारा किया गया।

हिंदी दिवस समारोह में बीसीसीएल के वार्षिक राजभाषा पुरस्कार डॉ. शंकर दयाल सिंह स्मृति राजभाषा सम्मान – 2020 से क्षेत्रों और विभागों को सम्मानित किया गया। क्षेत्रों में प्रथम पुरस्कार बस्ताकोला क्षेत्र, द्वितीय पुरस्कार सिजुआ क्षेत्र, तृतीय पुरस्कार लोदना व कुसुंडा क्षेत्र को प्राप्त हुआ। मुख्यालय के विभागों में प्रथम पुरस्कार वीआईपी प्रकोष्ठ, द्वितीय पुरस्कार पीएफ व पेंशन विभाग और भूसंपदा विभाग तथा तृतीय पुरस्कार जनसंपर्क विभाग, औद्योगिक संबंध विभाग, कर्मचारी स्थापना विभाग को प्राप्त हुआ। समारोह में पखवाड़ा के दौरान आयोजित की जाने वाली अन्य प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों के नाम की घोषणा भी की गयी।

समारोह में गृह मंत्री, भारत सरकार, कोयला मंत्री, भारत सरकार, अध्यक्ष, कोल इंडिया लिमिटेड और सचिव, राजभाषा विभाग के संदेश का भी वाचन किया गया। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य, राजभाषा पखवाड़ा की रिपोर्ट प्रस्तुतीकरण और धन्यवाद ज्ञापन श्री दिलीप कुमार सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया। उनके द्वारा कहा गया कि बीसीसीएल का राजभाषा विभाग सदैव आपके सहयोग के लिए तत्पर है। हिंदी में काम करने में किसी प्रकार की समस्या होने पर राजभाषा विभाग में संपर्क करें। कार्यक्रम का संचालन श्री उदयवीर सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का सजीव प्रसारण फेसबुक लाइव, यूट्युब लाइव और कंपनी की वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग सेवा के माध्यम से किया गया। इन माध्यमों से बीसीसीएल के क्षेत्रों से बहुत से अधिकारी व कर्मचारी कार्यक्रम से सीधे जुड़े। कोविड-19 महामारी से बचने के लिए निर्धारित मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) का पालन करते हुए संपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कॉरपोरेट स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही समीक्षा बैठक

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की कॉरपोरेट स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही समीक्षा बैठक का आयोजन दिनांक 26 सितंबर, 2020 को निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी. के. आर. मल्लिकार्जुन राव की अध्यक्षता में किया गया। श्री राव ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी तकनीकी रूप से सशक्त भाषा बन चुकी है। सभी कार्यालयीन कार्य अब अंग्रेजी की ही तरह हिंदी में भी किए जा सकते हैं। इसके लिए समर्पण, निष्ठा और लगन जरूरी है।

बैठक का आयोजन कोविड-19 को दृष्टिगत रखते हुए निर्धारित प्रोटोकॉल का पालन करते हुए किया गया। शारीरिक दूरी को बनाए रखने के उद्देश्य से बैठक में क्षेत्रों के प्रतिनिधियों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सेवा के माध्यम से जोड़ा गया। मुख्यालय के विभागों के नोडल हिंदी अधिकारियों को गूगल मीट के माध्यम से जोड़ा गया।

नराकास धनबाद द्वारा राजभाषा ई-संगोष्ठी

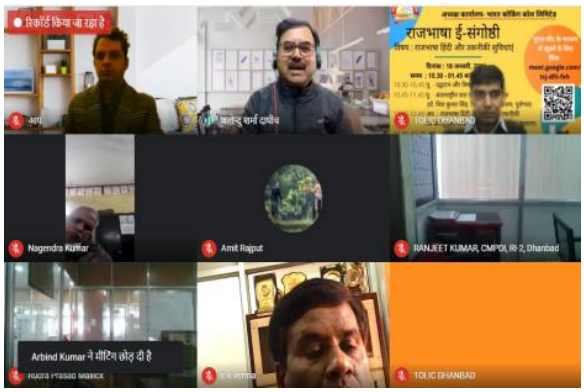

18 जनवरी 2021 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति धनबाद द्वारा 'राजभाषा हिंदी और तकनीकी सुविधाएं' विषय पर गूगल मीट के माध्यम से राजभाषा ई-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। ई-संगोष्ठी का उद्घाटन अध्यक्ष कार्यालय-बीसीसीएल के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री कुमार अनिमेष द्वारा किया गया। विषय प्रवर्तन करते हुए नराकास सचिव श्री दिलीप कुमार सिंह ने कहा कि भविष्य में उन्हीं भाषाओं का वजूद सुरक्षित रहेगा, जिन्होंने तकनीकी जगत में अपनी पहचान बनाई है।

तीन सत्रों में आयोजित इस ई-संगोष्ठी का प्रथम सत्र **"अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का विकास"** विषय पर आयोजित हुआ। इस सत्र में विषय विशेषज्ञ के तौर पर प्रो. शिव कुमार सिंह, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल को आमंत्रित किया गया था। द्वितीय सत्र **"राजभाषा हिंदी और आधुनिक तकनीकी"** पर था जिसमें विषय विशेषज्ञ के रूप में श्री बालेंदु शर्मा दाधीच, निदेशक (स्थानीयकरण), माइक्रोसॉफ्ट इंडिया को आमंत्रित किया गया। श्री दाधीच ने कंप्यूटर पर हिंदी में सहजता से कार्य करने संबंधी तमाम युक्तियां बतायीं और सभी प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि आप सभी कंप्यूटर पर हिंदी में टाइप करने के लिए इंस्क्रिप्ट पद्धति का ही प्रयोग करें। इसी प्रकार **"अनुवाद टूल कंठस्थ का प्रयोग"** विषय पर आयोजित तृतीय सत्र में श्री शशिपाल सिंह, संयुक्त निदेशक, सीडैक पुणे द्वारा 'कंठस्थ' अनुवाद प्रणाली का प्रयोगात्मक प्रदर्शन किया।

राजभाषा ई-कार्यशाला

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड मुख्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा 12 जनवरी 2021 को कंपनी के बस्ताकोला क्षेत्रीय कार्यालय में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राजभाषा ई-कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने संबंधी विभिन्न तकनीकी उपायों पर चर्चा की गयी। संकाय के रूप में उपस्थित श्री दिलीप कुमार सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री अनिरुद्ध नोनिया ने प्रतिभागियों को यूनिकोड आधारित हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण प्रदान किया और उन्होंने गूगल ट्रांसलेट, बिंग ट्रांसलेट, ई-महाशब्दकोश, वाइस टाइपिंग आदि तकनीकी युक्तियों पर चर्चा करते हुए इनका प्रदर्शन भी किया। कार्यशाला में श्री देवाशीष बाग, प्रबंधक (प्रशासन), श्री विनीत कुमार सिन्हा, उप प्रबंधक (कार्मिक), श्री वशिष्ठ मुनि पाण्डेय, प्रभारी (राजभाषा) सहित लगभग 30 अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

हमारी कंपनी में

कोल इण्डिया स्थापना दिवस समारोह-2020

46वें कोल इण्डिया स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 01.11.2020 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में एक समारोह का आयोजन किया गया। कोयला भवन मुख्यालय स्थित शहीद स्मारक परअध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री गोपाल सिंहएवं अन्य निदेशकगण, मुख्य सतर्कता पदाधिकारी तथा केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के उप महानिदेशक द्वारा शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए समारोह की शुरूआत की गयी। सबसे पहले शहीद स्मारक पर एक सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया जिसमें सभी धर्मों के धर्मगुरूओं द्वारा ईश वंदना की गयी। इसके बाद अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक एवं अन्य उच्चाधिकारियों एवं विभिन्न श्रमिक संगठन के प्रतिनिधियों द्वारा प्रशासनिक भवन में कोल इण्डिया ध्वज का ध्वजारोहण करके कोल इण्डिया कॉरपोरेट गीत के साथ मुख्य समारोह की शुरूआत की गयी।

स्थापना दिवस के इस विशेष अवसर पर कंपनी में कार्यरत एवं सेवानिवृत्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 'बीसीसीएल आपके द्वार - संवाद से समाधान' नाम से एक शिकायत निवारण प्रणाली का शुभारंभ भी किया गया। इसके अलावा अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक ने कंपनी के परिधीय क्षेत्र में रह रहे परियोजना प्रभावित लोगों के बच्चों में छुपी हुई खेल प्रतिभा को राष्ट्र के सामने लाने के उद्देश्य से विभिन्न खेलों में कुछ चयनित बच्चों को प्रशिक्षण देने के लिए एक खेल प्रशिक्षण केंद्र के शुभारंभ की भी घोषणा की, जहां चयनित बच्चों को 6 खेलों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इन खेलों में फुटबॉल, कुश्ती, एथेलेटिक्स, हॉकी, तीरंदाजी तथा साइकिलिंग शामिल हैं। कार्यक्रम में मुख्यालय के सभी महाप्रबंधकों, विभागाध्यक्षों, अधिकारियों व कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता रही।

बीसीसीएल में सेवा दिवस

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में दिनांक 10.01.2020 को 'सेवा दिवस' का आयोजन किया गया। इस अवसर धनबाद की विभिन्न सफ़ाई कर्मचारी बस्तियों, अंबेडकर स्कूल ऑफ़ मार्शल आर्ट्स, जगजीवन नगर, हरिजन बस्ती कोला कुसमा, स्नेह परोपकार केंद्र कोयला नगर आदि स्थानों पर कंपनी मुख्यालय के सीएसआर विभाग एवं कंपनी के सभी क्षेत्रों द्वारा समाज के सबसे महत्वपूर्ण सेवा प्रदाताओं में से एक, सफ़ाई कर्मचारियों और उनके परिवारों के बीच लगभग 4500 कंबलों का वितरण किया गया।

स्नेह परोपकार केन्द्र, कोयला नगर में आयोजित सेवा दिवस कार्यक्रम में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री गोपाल सिंह, निदेशक तकनीकी (परिचालन) श्री राकेश कुमार, निदेशक तकनीकी (योजना एवं परियोजना) श्री चंचल गोस्वामी, निदेशक वित्त श्री समीरन दत्ता, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष और अन्य अधिकारी एवं कर्मचारियों ने सहभागिता की और निकटवर्ती क्षेत्रों के सफाई कर्मचारियों के बीच कंबल एवं मास्क आदि का वितरण किया। इस अवसर पर बीसीसीएल प्रबंधन द्वारा यह भी निर्णय लिया गया कि प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को कंपनी में 'सेवा दिवस' के रूप में मनाया जाएगा और बीसीसीएल परिवार सेवा, मानवता एवं समाज में एक-दूसरे के उत्थान एवं सहयोग की भावना के लिए कार्य करेगा।

राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन

दिनांक 31.10.2020 को भारत के प्रथम गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस के अवसर पर 'राष्ट्रीय एकता दिवस'मनाया गया। इस अवसर पर कंपनी मुख्यालय कोयला भवन में आयोजित समारोह में निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री राकेश कुमार द्वारा उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्र की एकता एवं अखंडता बनाये रखने की शपथ दिलायी। इस अवसर पर निदेशक (वित्त) श्री समीरन दत्ता, निदेशक (कार्मिक) श्री पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव, मुख्य सतर्कता पदाधिकारी श्री कुमार अनिमेष, मुख्यालय के सभी विभागों के महाप्रबंधक / विभागाध्यक्ष एवं अधिकारी, कर्मचारी और श्रमिक प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे।

संविधान दिवस का आयोजन

26 नवम्बर, 1949 को भारतीय संविधान के पहली बार राष्ट्र को समर्पित होने के उपलक्ष्य में दिनांक 26-11-2020 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में संविधान दिवस मनाया गया। इस दौरान संविधान सभा के प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ॰ भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात सामुदायिक भवन कोयला नगर में विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से मुख्य कार्यक्रम की शुरूआत की गयी। यहाँ अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, अन्य निदेशकगण, मुख्य सतर्कता पदाधिकारी तथा विभिन्न विभागों के महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्षों के साथ कंपनी के अधिकारी/ कर्मचारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में दिल्ली में आयोजित 'संविधान प्रस्तावना पाठ' कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भी किया गया।

संविधान दिवस के अवसर पर झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित सेवा मामलों से संबंधित लोक

अदालत का आयोजन किया गया,जिसमे बीसीसीएल के निदेशक (कार्मिक) श्री पीवीकेआरएम राव के नेतृत्व में मुख्यालय के विधि विभाग के अधिकारियों के साथ-साथ सभी क्षेत्रों के कार्मिक पदाधिकारियों ने भी भाग लिया। इसी कड़ी में 'महिला सशक्तीकरण से संबन्धित संवैधानिक प्रावधान' विषय पर एक ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें कंपनी के कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

गणतंत्र दिवस-2021 का आयोजन

26 जनवरी 2021 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः काल कंपनी मुख्यालय कोयला भवन में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री गोपाल सिंह ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और सीआईएसएफ के जवानों द्वारा तिरंगे को सलामी दी गई। तत्पश्चात कंपनी निदेशक मंडल के सभी सदस्य, महाप्रबंधक, विभागाध्यक्ष एवं अन्य अधिकारी/ कर्मचारी गणतंत्र दिवस का मुख्य समारोह स्थल जियलगोरा स्टेडियम, लोदना में पहुंचे। समारोह के मुख्य अतिथि और कंपनी के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री गोपाल सिंह ने ध्वजारोहण किया और अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक एवं केन्द्रीय सुरक्षा बल के उप महानिरीक्षक श्री पी. रमन ने संयुक्त रूप से परेड का निरीक्षण किया एवं सलामी ली। इस अवसर पर बीसीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक ने अपने संबोधन कहा कि हमें कोयला उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त कर देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में निरंतर सहयोग करना है।

गणतंत्र दिवस समारोह में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों द्वारा सैन्य कौशल का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर कंपनी से सेवानिवृत्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 'क्यूआर' कोड तकनीक से युक्त स्मार्ट मेडिकल कार्ड सुविधा की भी शुरुआत की गयी। कार्यक्रम के अंत में लोदना क्षेत्र के महाप्रबंधक श्री गोपाल दास निगम द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

समाधान केंद्र की स्थापना

एक सशक्त एवं कुशल शिकायत निवारण तंत्र स्थापित करने के उद्देश्य से बीसीसीएल में गणतंत्र दिवस, 2021 के अवसर पर कंपनी निदेशक मंडल के साथ अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री गोपाल सिंह ने कोयला नगर स्थित आवास संख्या डी-13 एवं डी-14, सेक्टर 10 में क्रमशः 'भू-संपदा सहायता केंद्र' तथा 'समाधान केंद्र' का उद्घाटन किया गया। जहाँ 'भू-संपदा सहायता केंद्र' में भू-संपदा अर्थात जमीन आदि संबंधी मामलों का निवारण किया जाएगा, वहीं 'समाधान केंद्र' कंपनी के वर्तमान एवं पूर्व कर्मचारियों की शिकायतों का निवारण केंद्र के रूप में कार्य करेगा। शिकायतकर्ता अपने व्यक्तिगत विवरण के साथ शिकायत की विस्तृत जानकारी के साथ व्हाट्सएप नं. 9470595008 पर कर सकते हैं। इस उद्देश्य से गठित एक समर्पित टीम द्वारा नियमानुसार शिकायत का समाधान 30 दिनों के अंदर किया जाएगा।

गांधी जयंती के अवसर पर विभिन्न आयोजन

दिनांक 02 अक्तूबर 2020 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर कंपनी के निदेशक मंडल सहित, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने 'स्वच्छता शपथ'ली और तत्पश्चात महात्मा गाँधी जी के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की गयी। गाँधी जयंती के विशेष अवसर पर भारत कोकिंग कोल लि॰द्वारा एक 'स्नेह परोपकार केंद्र' का भी लोकार्पण किया गया।इस केंद्र के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर और जरूरतमंद लोगों को जरूरत की सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

इसके बाद, निदेशक (कार्मिक) श्री पीवीकेआरएम राव कल्याण और प्रशासन विभाग की टीमों के साथ क्रमशः लालमणि वृद्धाश्रम और निर्मला कुष्ठरोग केंद्र, गोविंदपुर धनबाद गए जहाँ उन्होने आवश्यक वस्त्रों, कंबलों और भोजन के पैकेटों का वितरण किया।

मुख्यालय के साथ-साथ कंपनी के विभिन्न क्षेत्रों में भी इस अवसर पर अनेक आयोजन किए गए। इनमें से कुछ प्रमुख आयोजन इस प्रकार हैं -

- बस्ताकोला क्षेत्र की बेरा कोलियरी में महात्मा गांधी इको पार्क का उद्घाटन।
- लोदना क्षेत्र में महात्मा गांधी इको-रेस्टोरेशन पार्क का उद्घाटन।
- कतरास क्षेत्र में महात्मा गांधी स्मृति उपवन का उद्घाटन तथा रामकनाली, कतरास में एक कौशल विकास केंद्र की शुरुआत।
- बरोरा क्षेत्र में कौशल विकास केंद्र का उद्घाटन।
- ब्लॉक-2 क्षेत्र के महात्मा उद्यान का उद्घाटन एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती का आयोजन

दिनांक 23.01.2021 को कंपनी मुख्यालय में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 125वीं जयंती मनायी गयी। इस अवसर पर कोयला नगर स्थित नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा पर बीसीसीएल के निदेशक (तकनीकी/परिचालन) श्री राकेश कुमार, निदेशक (वित्त) श्री समीरन दत्ता, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री कुमार अनिमेष, के.औ.सु.ब. के उप महानिरीक्षक श्री पी रमन, महाप्रबंधक (कार्मिक/औ.सं.) श्री एस. एन. सिन्हा तथा विभिन्न विभागों के महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्षों तथा अन्य अधिकारियों / कर्मचारियों द्वारा माल्यार्पण कर नेताजी को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह- 2020

केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में दिनांक 27-10-2020 से 02-11-2020 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। मुख्य सतर्कता पदाधिकारी श्री कुमार अनिमेष, निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव, निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री राकेश कुमार, निदेशक (वित्त) श्री समीरन दत्ता,उप महाप्रबंधक (सतर्कता) श्री सुनील कुमार राय एवं मुख्यालय के विभागाध्यक्षों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में दीप प्रज्वलित कर सतर्कता जागरूकता सप्ताह की शुरूआत की गयी। कार्यक्रम के आरंभ में मुख्य सतर्कता पदाधिकारी श्री कुमार अनिमेष ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सतर्कता शपथ दिलायी। कार्यक्रम में भारत के माननीय राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त के संदेशों का वाचन भी किया गया।

इस बार सतर्कता जागरूकता सप्ताह का विषय था - "सतर्क भारत समृद्ध भारत", जिसे ध्यान में रखते हुए भ्रष्टाचार समापन के लिए सप्ताह भर अनेक जागरूकता अभियान, कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं, कार्यशालाओं और बेव-संगोष्ठियों आदि का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बीसीसीएल सतर्कता विभाग द्वारा सतर्कता पत्रिका 'चेतना' का भी विमोचन किया गया। समापन समारोह के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को मुख्य सतर्कता पदाधिकारी श्री कुमार अनिमेष द्वारा पुरस्कृत किया गया।

स्वच्छता माह-2020

भारत सरकार के दिशा-निर्देशानुसार देश भर में चलाए जा रहे स्वच्छता अभियान के मद्देनजर भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में 01.10.2020 से 31.10.2020 तक स्वच्छता माह का आयोजन किया गया। 01 अक्तूबर 2020 को सभी विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा स्वच्छता शपथ लेकर इस अभियान की शुरूआत की गयी। माह के दौरान अनेक जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कुछ प्रमुख कार्यक्रम का विवरण इस प्रकार है

- 19.10.2020 "**नए भारत के निर्माण में स्वच्छ भारत अभियान की भूमिका**" विषय पर कॉरपोरेट स्तरीय निबंध प्रतियोगिता।
- 21.10.2020 को गूगल मीट के माध्यम से स्वच्छता ही सेवा है विषय पर कॉरपोरेट स्तरीय स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता।
- 29.10.2020 को "आज के दौर में गाँधी के विचार, गाँधीजी के विचारों की पुनर्कल्पना, गाँधी विचारधारा एवं सामाजिक कार्य" आदि विषयों पर परिचर्चा हेतु एक वेबिनार का आयोजन किया गया।
- 31.10.2020 को निदेशक (कार्मिक) द्वारा 'स्वच्छता एप' का लोकार्पण किया गया। यह एप्प कंपनी के कार्मिकों को अपनी कालोनियों तथा आवासों में स्वच्छता से संबंधित शिकायत दर्ज कराने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करेगा।

04 नवंबर 2020 को स्वच्छता माह 2020 का समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में निदेशक (कार्मिक) श्री पी०वी०के०आर०एम राव ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण किया और अपने संबोधन में लोगों का स्वच्छता के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया। इस अवसर पर उन्होंने माह के दौरान आयोजित विभिन्न ऑनलाइन/ ऑफलाइन प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया।

विधिक मामलों की ऑनलाइन निगरानी

विधि विभाग, बीसीसीएल ने कंपनी के सिस्टम विभाग के साथ मिलकर **'ऑनलाइन लीगल केस ट्रैकिंग सिस्टम'**के लिए एक मॉड्यूल विकसित किया है। इसका उद्घाटन निदेशक (कार्मिक) बीसीसीएल श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव ने 21.01.2021 को कोयला भवन स्थित अपने कक्ष में विधि विभाग, कार्मिक विभाग और सिस्टम विभाग के अधिकारियों की उपस्थिति में किया।कंपनी द्वारा विकसित यह मॉड्यूल विभिन्न अदालती मामलों की सुचारू और प्रभावी स्थिति ट्रैकिंग में सहायक होगा, जिससे क्षेत्रों और इकाइयों में इन मामलों को देखने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के समय और प्रयास को कम किया जा सकेगा। इस तरह कार्मिकों के कार्य-प्रदर्शन में वृद्धि होगी। मॉड्यूल के उद्घाटन के अवसर पर श्री एस.एन. सिन्हा महाप्रबंधक (कार्मिक)/राजभाषा, डॉ. के.एस. सिन्हा, विभागाध्यक्ष, विधि विभाग एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

दृष्टि-बाधित बच्चों के लिए कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रयोगशाला

बीसीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री गोपाल सिंह ने 07 अक्टूबर 2020 कोजगजीवन नगर स्थित दिव्यांग बच्चों के स्कूल "पहला कदम" में दृष्टि-बाधित बच्चों के लिए 'ब्रेन सक्षम कम्प्यूटर प्रशिक्षण' हेतु एक कम्प्यूटर प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि देश और समाज के बेहतर भविष्य निर्माण में स्कूलों की भूमिका हमेशा से ही महत्वपूर्ण रही है। स्कूलों को उचित पठन-पाठन और कौशल विकास के माध्यम से बच्चों के भविष्य को सही दिशा देने के लिए हर संभव प्रयास करने चाहिए। इस अवसर पर पहला कदम की संचालिका श्रीतमी अनीता अग्रवाल एवं संस्था के अन्य सभी सदस्य उपस्थित रहे और सभी ने संस्था के लिए समर्पित भाव से कार्य करते रहने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

समर्पण महिला समिति द्वारा सामाजिक कार्य

समर्पण महिला समिति, बीसीसीएल ने दिनांक 24.12.2020 को समाज के निर्धन व वंचित वर्ग के लिए एक छोटी सी कोशिश के तहत कोयला नगर स्थित साईं मंदिर में कंबल वितरण किया। ऐसे साधन विहीन लोगों के लिए कड़ाके की ठंड भी जानलेवा हो सकती है। समिति की उपाध्यक्ष श्रीमती पी. कमला राव के मार्गदर्शन में समर्पण महिला समिति की सदस्यों, श्रीमती चेतना कुमार, श्रीमती सीमा सिन्हा, श्रीमती राजेश श्रृंगी, श्रीमती सरिता महापात्रा, श्रीमती नीरू सिन्हा एवं श्रीमती रश्मि कुमार आदि ने सैकड़ों जरूरतमंद व्यक्तियों को कंबल वितरण किया।

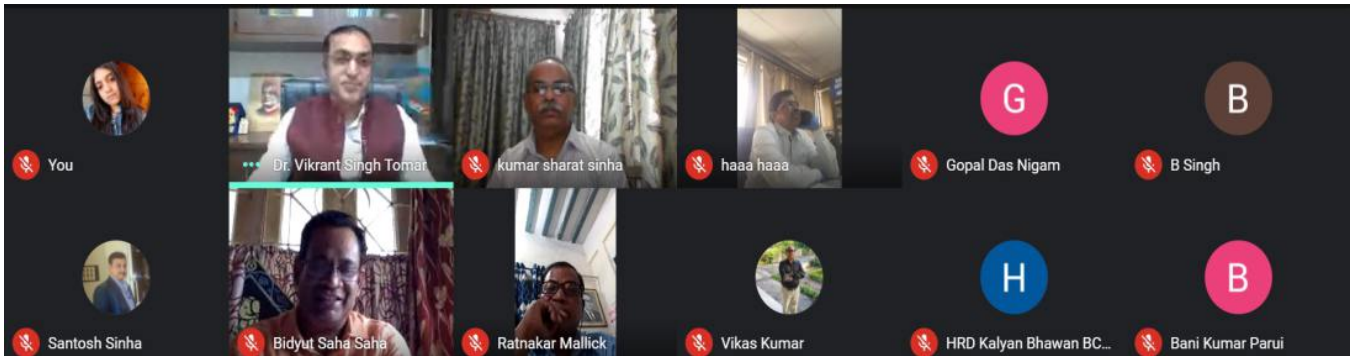

ऑनलाइन प्रशिक्षण एवं कार्यशालाएं

अधिकारी विकास कार्यक्रम

मानव संसाधन विकास विभाग, बीसीसीएल द्वारा दिनांक 18.11.2020 को कंपनी मुख्यालय एवं क्षेत्रों के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए "अधिकारी विकास कार्यक्रम" विषय पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में महाप्रबंधकों, विभागाध्यक्षों, परियोजना पदाधिकारियों एवं क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधकों ने भाग लिया। संकाय सदस्य के रूप में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित सरकारी और निजी संगठनों को प्रबंधकीय कोचिंग प्रदान करने का कई वर्षों का अनुभव रखने वाले एवं प्रसिद्ध प्रेरक वक्ता प्रबंधन सलाहकार डॉ.विक्रांत सिंह तोमर द्वारा व्याख्यान दिया गया। उन्होंने विशेष रूप से वर्तमान समय में हर जगह उत्पन्न उथल-पुथल और अवांछित परिस्थितियों के बीच संगठनों का नेतृत्व करने के लिए तैयार रहने के प्रभावी तरीकों पर प्रकाश डाला।

वरिष्ठ अधिकारियों के लिए ऑनलाइन कार्यशाला

मानव संसाधन विकास विभाग, बीसीसीएल द्वारा महाप्रबंधक श्री विकास कुमार की पहल पर 26 से 29 नवंबर तक कंपनी के30 वरिष्ठ अधिकारियों (क्षेत्रों के महाप्रबंधकों और परियोजना अधिकारियों) के लिए "द आर्ट ऑफ लिविंग" के सहयोग से 'समग्र स्वास्थ्य - Holistic Wellbeing' विषय पर चार दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के माध्यम से कंपनी प्रबंधन का यह विशेष प्रयास था कि कंपनी के सबसे महत्वपूर्ण स्तंभों अर्थात क्षेत्रीय महाप्रबंधकों और परियोजना अधिकारियों के समग्र मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ तनावपूर्ण दिनचर्या में खुशहाली को बरकरार रखा जा सके। कोविड-19 के चुनौतीपूर्ण माहौल में भी निरंतर कोयला उत्पादन और प्रेषण की दिशा में अथक परिश्रम कर रहे अधिकारियों के लिए ऐसे कार्यक्रम नितांत आवश्यक हैं। कार्यशाला में 'द आर्ट ऑफ लिविंग' की ओर से श्री जयेश दौलत जादा और सुश्री शिवानी शिवहरे ने प्रशिक्षण प्रदान किया। दोनों ही प्रशिक्षकों को भारत और भारत के बाहर सरकारी एवं निजी क्षेत्रों के वरिष्ठ कॉरपोरेट अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करने का व्यापक अनुभव है। मानव संसाधन विकास विभाग के मुख्य प्रबंधक श्री एम. के. पांडेय ने कार्यशाला का समन्वय किया और अंत में धन्यवाद ज्ञापन दिया।

कार्यस्थल पर लैंगिक संवेदनशीलता

बीसीसीएल के मानव संसाधन विकास विभाग द्वारा दिनांक 30.11.2020 को "कार्यस्थल पर लैंगिक संवेदनशीलता" विषय पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विभिन्न क्षेत्रों एवं मुख्यालय के लगभग 30 अधिकारियों ने भाग लिया। प्रथम सत्र में आईआईटी (आईएसएम), धनबाद की प्राध्यापक सुश्री मृणालिनी पाण्डेय ने प्रतिभागियों के साथ केस स्टडी, व्यक्तिगत अनुभव एवं प्रश्नावली आदि साझा करते हुए कार्यस्थल पर लैंगिक संवेदनशीलता एवं समानता के आधार भूत तत्वों पर व्याख्यान दिया। द्वितीय सत्र में जेवीयर इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विस, राँची की प्राध्यापक सुश्री निधि शुक्ला ने संबोधित किया। इस अवसर पर श्री विकास कुमार, महाप्रबंधक (मा.सं.वि.) और श्री एम. के. पाण्डेय, मुख्य प्रबंधक (खनन) / मानव संसाधन विकास विभाग आदि उपस्थित रहे।

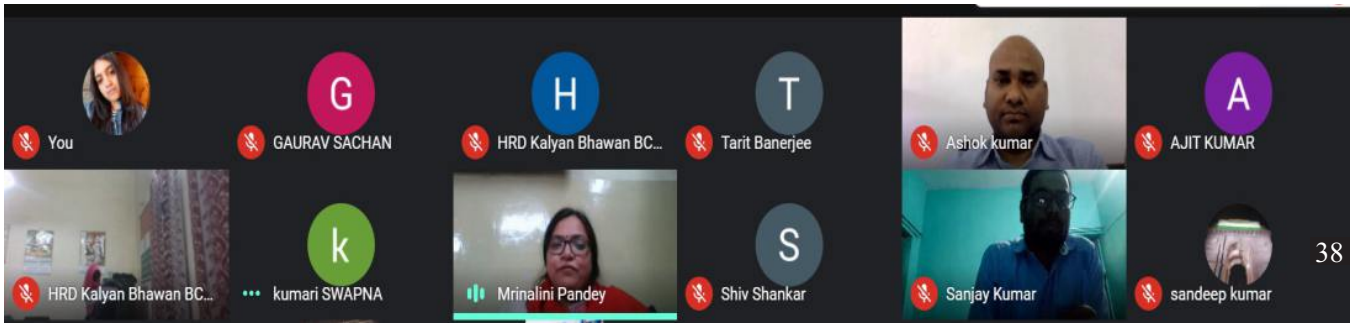

विविध बैठकें

झारखंड राज्य खेल संघ एवं बीसीसीएल के बीच बैठक

कोल इंडिया स्थापना दिवस 2020 के अवसर पर लिए गए निर्णय के संदर्भ में बीसीसीएल के परिचालन क्षेत्रों के आसपास रहने वाले बच्चों को खेल प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से दिनांक 16.11.20 को कोयला भवन अतिथि गृह में झारखंड राज्य खेल संघ के प्रतिनिधियों और कल्याण विभाग, बीसीसीएल के बीच एक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव, निदेशक (कार्मिक) बीसीसीएल द्वारा की गयी। बैठक में प्रारंभिक स्तर पर 14 वर्ष से कम आयु की 60 बालिकाओं का चयन करने और उन्हें स्पोर्ट्स कोचिंग प्रदान करने का निर्णय लिया गया। निदेशक (कार्मिक) ने महाप्रबंधक (कल्याण) श्रीमती आहुति स्वाईं को विभाग की टीम के साथ जल्द से जल्द प्रशिक्षण प्रक्रिया की योजना तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी। बैठक में झारखंड राज्य खेल संघ की ओर से श्री मधुकांत पाठक, कोषाध्यक्ष, एएफआई / अध्यक्ष झारखंड एथलेटिक एसोसिएशन, श्री भोलानाथ सिंह, अध्यक्ष झारखंड कुश्ती संघ, श्री सुमंत चंद्र मोहंती, उपाध्यक्ष, झारखंड तीरंदाजी संघ, श्री बिजय शंकर सिंह, महासचिव, हॉकी झारखंड और श्री गुलाम रब्बानी, सचिव, झारखंड फुटबॉल एसोसिएशन आदि उपस्थित रहे।

केन्द्रीय सलाहकार समिति की बैठक

कंपनी की केन्द्रीय सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 07-10-2020 को कोयला भवन मुख्यालय में अध्यक्ष-सह-प्रबन्ध निदेशक श्री गोपाल सिंह की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। बैठक में कंपनी में कोयले की उत्पादन, कोयला प्रेषण एवं कंपनी के आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने संबंधी अनेक मुद्दों पर चर्चा की गयी। इसके अलावा, कोविड-19 से उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने के उपायों पर भी चर्चा की गयी। निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव, निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री राकेश कुमार, निदेशक (वित्त) श्री समीरन दत्ता, निदेशक तकनीकी (योजना एवं परियोजना) श्री चंचल गोस्वामी के अलावा समिति के सदस्य श्री बच्चा सिंह,श्री सिद्धार्थ गौतम, श्री एस.के.बक्शी, श्री ढुल्लु महतो, श्री गोराचन्द चटर्जी, श्री अर्जुन सिंह और श्री आर. तिवारी आदि उपस्थित थे।

सुरक्षा समिति की बैठक

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के कोयला खदानों में सुरक्षा के उचित मानकों को अपनाने एवं कोयला खदानों में कार्यरत श्रमिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने संबंधी अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा के उद्देश्य से दिनांक 29.08.2020 को कंपनी मुख्यालय में त्रिपक्षीय सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक की अध्यक्षता खान सुरक्षा महा निदेशालय के महानिदेशक श्री डी के साहू ने की। बैठक में बीसीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी एम प्रसाद, निदेशक तकनीकी (परिचालन) श्री राकेश कुमार, निदेशक (वित्त) श्री समीरन दत्ता, निदेशक तकनीकी (योजना एवं परियोजना) श्री चंचल गोस्वामी एवं निदेशक (कार्मिक) श्री पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव, महाप्रबंधक (सुरक्षा एवं बचाव) श्री ए. के. सिंह के अलावा मुख्यालय के सभी महाप्रबंधक/ विभागाध्यक्ष, क्षेत्रीय महाप्रबंधक और श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधि एवं सुरक्षा समिति के पदाधिकारी आदि उपस्थित थे।

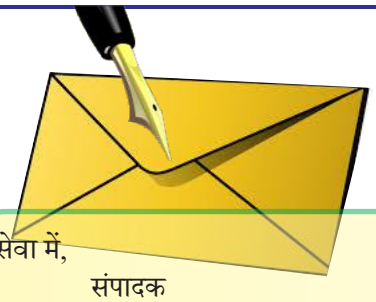

पाठक प्रतिक्रिया

सेवा में,

दिनांक 26-10-2020

संपादक
कोयला भारती पत्रिका
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
कोयला नगर, धनबाद-826005

विषय: गृह पत्रिका 'कोयला भारती' के संबंध में।

महोदय,

उपरोक्त पत्रिका के प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग द्वारा आपकी सराहना की जाती है। हिंदी को सरकारी कामकाज में बढ़ावा देना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था- "राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।" हिंदी केप्रगामी प्रयोग के लिए आपके द्वारा किए जा रहे प्रयास स्वरूप प्रकाशित पत्रिका का अवलोकन एवं अध्ययन करने पर निम्न सुझाव दिए जा रहे हैं, जिससे पत्रिका भविष्य में अधिक प्रेरणाप्रद एवं विचारोत्तेजक रुप में केंद्र सरकार के कार्मिकों को हिंदी में सरकारी कामकाज करने के लिए प्रेरित करने में प्रभावशाली भूमिका निभा सके -

- चित्रों की संख्या कम की जाए।
- राजभाषा विभाग के ई-टूल्स का प्रचार किया जाए जिसके द्वारा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए निर्मित सूचना प्रौद्योगिकी के उन उपकरणों की जानकारी दी जाए जिससे हिंदी में मूल काम करने में सहायता मिले यथा लीला राजभाषा, लीला प्रवाह, ई-महाशब्दकोश, ई-सरल वाक्यकोश, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म।
- श्री राजेन्द्र राम का लेख **'राष्ट्रीय एकता और हिंदी'**सराहनीय है।
- पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए ई-पत्रिका प्रकाशित करने का प्रयास किया जाए और उसे राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर ई-पत्रिका पुस्तकालय में अपलोड किया जाए।

आशा है आप भविष्य में भी राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के प्रति इसी प्रकार निष्ठा एवं समर्पण से प्रयास जारी रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित

मंजुला सक्सेना
उप सचिव (अनुसंधान)
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली -110001

दिनांक: 19-10-2020

सेवा में

श्री उदयवीर सिंह, संपादक'कोयला भारती'
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, राजभाषा विभाग
कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद, झारखण्ड-826005

विषयः कोयला भारती के सितम्बर-2020 संस्करण के प्राप्ति के संबंध में।

प्रिय महोदय,

कृपया 'टीम मैथन' दामोदर घाटी निगम की शुभेच्छा स्वीकार करें।

आपका पत्र दिनांक-10.10.2020 एवं 'कोयला भारती' पत्रिका का 33वाँ अंक मेरे हाथों में है। पन्ने पलटते वक्त आभास होता है कि प्रकाशन की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए आप कितना परिश्रम करते हैं। 'कोयला भारती' के माध्यम से आपने भारत कोकिंग कोल लिमिटेड एवं नराकास, धनबाद के सदस्य कार्यालयों के रचनाकारों को अभिव्यक्ति के प्रकटीकरण का जो सशक्त मंच उपलब्ध कराया है वह काबिले तारीफ है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस अंक में आपने सृजन के जिन मोतियों को पिरोया है वे पठनीय एवं संग्रहणीय हैं।

'कोयला भारती' के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर धन्यवाद।

रुद्र प्रताप सिंह
वरि. अपर निदेशक, मानव संसाधन
दामोदर घाटी निगम, मैथन परियोजना

राजभाषा नीति के महत्त्वपूर्ण बिंदु

1. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का शत प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।
2. हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्य रुप से हिन्दी में ही दिए जाएं।
3. सुनिश्चित करें कि आपके कार्यालय में लक्ष्य के अनुसार हिन्दी में पत्राचार हो।
4. समस्त मैनुअल, कोड और अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य और प्रपत्र (फार्म) आदि हिंदी और अंग्रेजी में मुद्रित कराए जाएं और प्रयोग किए जाएं।
5. रजिस्टरों के शीर्षक हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में सुनिश्चित करें तथा रजिस्टरों में हिंदी में ही प्रविष्टियां दर्ज की जाएं।
6. समस्त नामपट्ट, सूचनापट्ट, संकेतक, पत्र शीर्ष, फाइल कवर, रबर स्टैम्प, वाहनों पर कंपनी का नाम, पहचान पत्र, निमंत्रण पत्र, बैनर, आगंतुक कार्ड तथा लिफाफों पर आदि पर कंपनी का नाम हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में छपवाए जाएं।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत उल्लिखित दस्तावेज़ों की सूची

(निम्नलिखित दस्तावेज अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाएं)

क्र. सं.	दस्तावेज का नाम	Name of the document
1.	संकल्प	Resolutions
2.	सामान्य आदेश *	General Orders *
3.	नियम	Rules
4.	अधिसूचनाएँ	Notifications
5.	प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट	Administrative & Other Reports
6.	प्रेस विज्ञप्तियाँ	Press Communiques
7.	संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट	Administrative and other reports to be laid before a House or the Housesof Parliament.
8.	संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय दस्तावेज।	Official papers to be laid before a House or the Houses of Parliament.
9.	संविदाएँ	Contracts
10.	करार	Agreements
11.	अनुजप्तियाँ	Licences
12.	अनुज्ञापत्र	Permits
13.	निविदा सूचनाएँ	Tender Notices
14.	निविदा प्रारूप	Tender Forms

** ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और जो स्थायी प्रकार के हों;*
** ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों केसंबंध में हों या उनके लिए हों;*
** ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।*

'क' क्षेत्र :- बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड,राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र।

'ख' क्षेत्र :- गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य।

'ग' क्षेत्र :- उपर्युक्त दोनों के अतिरिक्त भारत के शेष राज्य एवं केन्द्रशासित प्रदेश।

हिंदी में कार्य करने के चार सूत्र : दृढ़ निश्चय, प्रयास, स्वाभिमान और आत्मविश्वास

हम करते हैं पर्यावरण के अनुकूल खनन

बीसीसीएल ने कोयला उत्पादन बढ़ाने के लिए अपने खनन कार्य में तीन सौ टन क्षमता के डंपर, एक हाइड्रोलिक शॉवेल और तीन डोजरों को शामिल किया है।

मोनीडीह भूमिगत खदान में कामगारों को आने-जाने के लिए 'मोनोरेल मैन-राइडिंग सिस्टम' की स्थापना की गयी है: भारत में पहली बार।

बीसीसीएल ने अपने क्षेत्र में स्थित गाँवों में जलापूर्ति के लिए झारखंड सरकार के साथ समझौता किया है।

बीसीसीएल त्रिस्तरीय पारिस्थितिक पुनर्स्थापन करने में अग्रणी कंपनी है।

आधुनिक उपकरणों एवं सुविधाओं से युक्त बीसीसीएल का केंद्रीय अस्पताल सेवारत कर्मचारियों के साथ-साथ अपने हितधारकों को भी सेवा उपलब्ध करा रहा है।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

एक मिनीरत्न कंपनी

(कोल इण्डिया लिमिटेड का एक अंग)

कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद – 826005

सीआईएन : U10101JH1972GOI000918

FACEBOOK/BCCLOFFICIAL TWITTER/BCCLOFFICIAL HTTP://WWW.BCCLWEB.IN/

Verma Enterprises, 94313 14776